जीवन का अनुभव

शांति

Volume 54

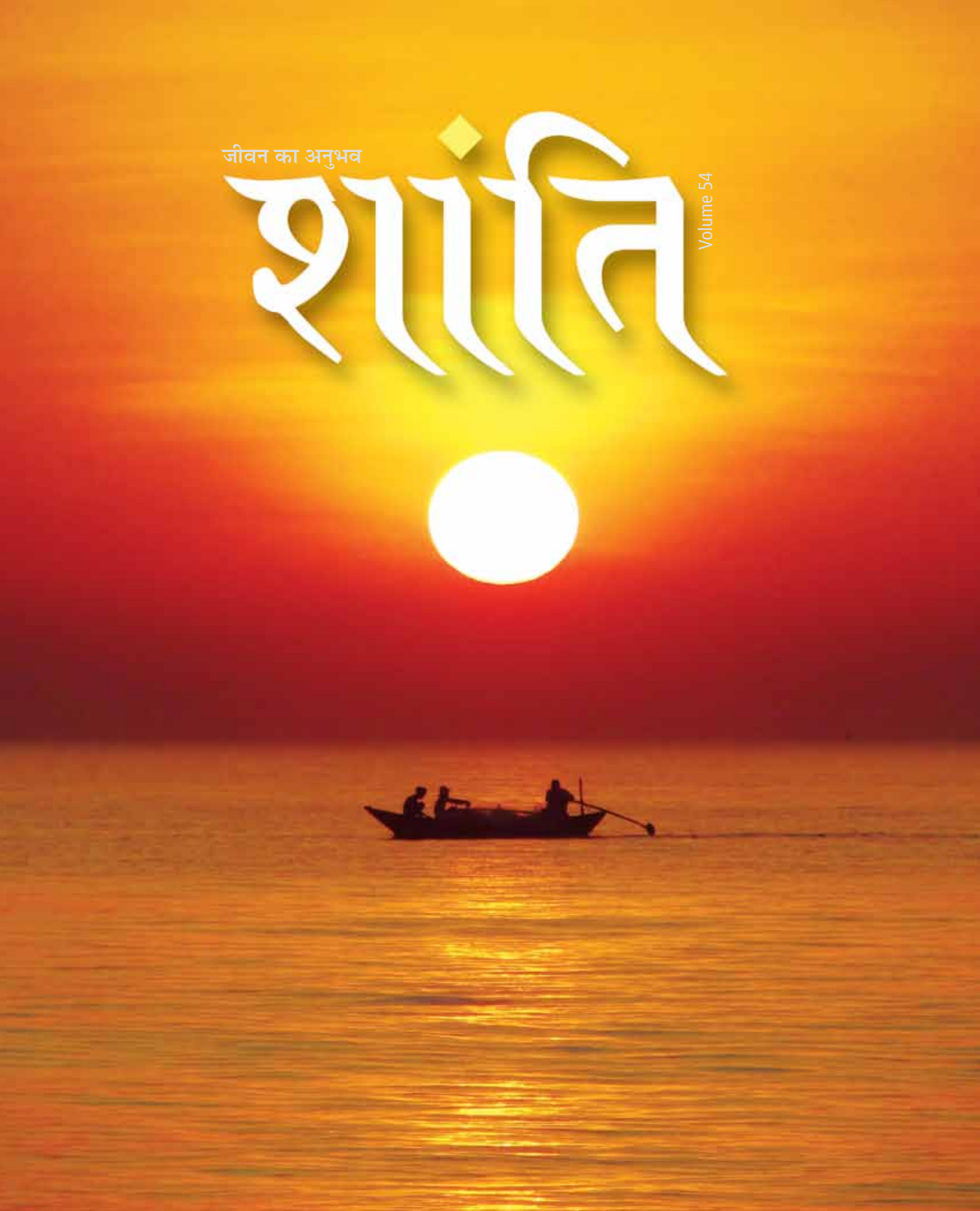

विषय सूची

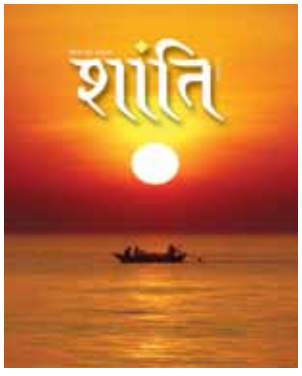

मैंने जहां तक देखा है, सबको शांति चाहिए। कोई ऐसा नहीं है, जिसको शांति नहीं चाहिए। सबको शांति चाहिए, पर क्यों नहीं है? क्योंकि अगर अपने अंदर वाले से प्रेम नहीं है, अपने स्वांस से प्रेम नहीं है, स्वयं के जीवन से प्रेम नहीं है तो हृदय के अंदर शांति कैसे होगी?

संपादक- डॉ. मनोज अबोध
संपादकीय टीम - आर. के. राय, सेवकानंद, राकेश कपिल
प्रकाशक- राज विद्या केन्द्र, शहूरपुर, छत्तरपुर, नई दिल्ली- 110074
फोन: 011-26654921-23
फैक्स: 011-26654502
ई-मेल: rvkender@vsnl.net
वेब साईट: www.rajvidyakender.org
वितरक- धनंजय कुमार, प्रोडक्शन, राज विद्या केन्द्र; फोन: 011-26655400
फैक्स: 011-26654502
ई-मेल- sales@rvk.in

मुद्रक- ई. आई. एच. लिमिटेड, प्लाट नं.-22, सेक्टर-5, आई.एम.टी. मानेसर, गुड़गांव-122050, हरियाणा

© रूपसज्जा- पियाली डिजाईन; ई-मेल: peali.duttagupta@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित- राज विद्या केन्द्र, बिना राज विद्या केन्द्र की लिखित अनुमति के इस पत्रिका का कोई अंश किसी भी रूप में, किसी भी प्रकार पुनरुत्पादित अथवा प्रतिलिखित नहीं किया जा सकता।

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन - महाराजी

6 मन-बुद्धि से परे!
ऐसी चीज क्या है, जो मन और बुद्धि से परे है? वह चीज, जिसे मनुष्य अपने मन और बुद्धि से नहीं समझ सकता? जिसका नाम किसी भाषा में नहीं है। उसको इन आँखों से नहीं देखा और पहचाना जा सकता है। उसके लिए चाहिए — दिव्य चक्षु।

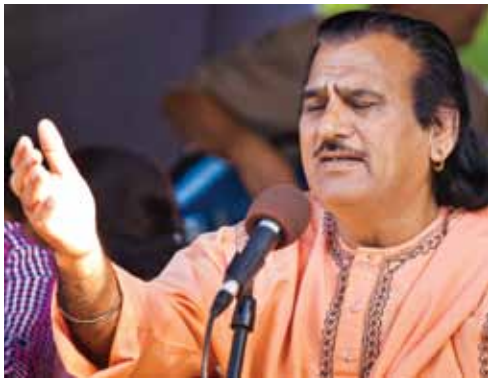

18 ज्ञान की चर्चा!
मैं जिस ज्ञान को देता हूं, अगर आप इस ज्ञान को समझ जाएं तो आपकी दुनिया बदल जायेगी। इस ज्ञान का संबंध उसी चीज से है, जिसका कभी नाश नहीं होता है। यह ज्ञान ऐसी जगह ले जाता है, जहाँ सारी चिंताएं खत्म हो जाती हैं।

30 तीन बातें!
आप कहीं भी हों, किसी भी संकट में हों, हमारी बात याद रखें। इस जीवन के अंदर अगर सफलता प्राप्त करनी है तो तीन बातों को समझना बहुत जरूरी है। पहली बात — छल-कपट को छोड़ो! दूसरी बात — बालक का हृदय लेकर। तीसरी बात — समय का महापुरुष।

38 बोध कथा — शक
संशय और शक ही सारे संसार को तबाह कर रहा है। शक के संबंध में स्पष्ट करती एक प्रेरणादायक कहानी।

40 पाठकों के पत्र

42 मित्र हमारा होय
अपनी सभी बुराइयों को त्यागकर सच्चे भाव से ही परमात्मा का असली प्रेम, असली स्नेह प्राप्त किया जा सकता है। इस बात को स्पष्ट करती कबीरदास जी की अनमोल वाणी।

संदेश

सबको अच्छे तरीके से, प्रेम से रहना चाहिए। परिवार में प्रेम होना चाहिए। परिवार में अच्छे संस्कार डालना चाहिए। परिवार में सबको इज्जत मिलनी चाहिए, सबको प्रेम मिलना चाहिए, आपस में असली प्रेम होना चाहिए। क्योंकि बहुत-से मां-बाप समाज के लिए अपने परिवार की बलि दे देते हैं। यह कभी नहीं होना चाहिए। परिवार एक ऐसी चीज है, जहां से मनुष्य को प्रेम मिलता है। आपस में लोगों से प्रेम हो। समाज कुछ भी कहे, परिवार की बलि नहीं देना चाहिए। समाज तो कहता रहेगा। समाज को कहने की आदत है। जो बुरी बात होती है, उसके लिए समाज कुछ नहीं कहता है। जब देशों में लड़ाइयां होती हैं तो समाज कुछ नहीं कहता है। समाज चुपचाप बैठ जाता है। समाज यह नहीं कहता है कि ''यह क्यों हो रहा है, इसको बंद करो।'' बल्कि लोग और रुचि लेते हैं और पूछते हैं, ''कौन जीता? कौन मरा? क्या हुआ?'' समाज की आदत है — बुरा देखना! अच्छा देखना नहीं। समाज के लिए परिवारों की बलि चढ़ जाती है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

आपका परिवार है। उसमें प्रेम से, प्यार से, आनंद से रहो। इस बात को समझो कि ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसमें भगवान ने कोई न कोई खूबी नहीं छिपाई हुई है। मां-बाप का काम है कि बच्चों में जो खूबी छिपी हुई है, उसको बाहर आने में, उसको प्रकट करने में अपने बच्चों का सहयोग करें। हर एक मनुष्य के अंदर भगवान ने खूबी दी है। हर एक को खूबी दी है, पर क्या खूबी दी है? यह तो मां-बाप उसको बाहर निकालने में, उसको प्रकट करने में कामयाब हो सकते हैं। पता नहीं क्या खूबी है, पर खूबी सबको दी है। कई बार स्कूल में बच्चा ठीक ढंग से नहीं पढ़ता है तो मां-बाप उसको धमकाते हैं। आइंस्टाइन इतना बड़ा वैज्ञानिक था। उसके साथ भी यही हुआ। उसके टीचर कहते थे कि यह कुछ होगा ही नहीं। तो टीचर मां-बाप नहीं होते हैं। मां-बाप तो मां-बाप होते हैं। इसलिए कुछ भी हो, घर में प्रेम होना चाहिए। बच्चे के साथ, अपने परिवार के साथ असली प्रेम होना चाहिए। जो परिवार का प्रेम है, वह परिवार के साथ होना चाहिए। भगवान के साथ भगवान का प्रेम होना चाहिए, अंदर के साथ अंदर का प्रेम होना चाहिए और गुरु महाराज जी के साथ गुरु महाराज जी का प्रेम होना चाहिए। तो अच्छी बात है, अपने परिवार को अच्छे तरीके से चलाओ।

असली सत्य आपके अंदर है। इस स्वांस का आना-जाना सबसे बड़ा सत्य है, क्योंकि इसके आने-जाने से ही आप भगवान को समझ सकते हैं, भगवान का अनुभव कर सकते हैं, उस आनंद का अनुभव कर सकते हैं। इसलिए सत्य से प्यार करो। मैं सच कहता हूं कि अगर आप ऐसा करेंगे तो आपका सारा जीवन हरा-भरा हो जायेगा।

महाराजी

मन-बुद्धि
मन-बुद्धि से परे!

मूल चीज क्या है? ऐसी क्या चीज है, जिसको जानने से, जिसको समझने से हमारे जीवन के अंदर शांति हो? ऐसी शांति नहीं, जो मन की बनाई हुई हो। कई लोग इस बात को सरल तरीके से नहीं समझ पायेंगे कि मन की बनाई हुई शांति क्या है? पर समझने की बात है कि मन का क्या-क्या बनाया हुआ है? क्या-क्या असली है और क्या-क्या मन का बनाया हुआ है? इन दोनों चीजों में एक फर्क तो यह है, जिसे समझाते हुए भगवान कृष्ण कहते हैं कि यह मन और बुद्धि से परे है। एक चीज तो ऐसी हुई, जिसको आप मन या बुद्धि से नहीं समझ सकते और एक ऐसी चीज हुई, जो मन ने बना रखी है, जिसके पीछे दुनिया दौड़ती है। एक वह भगवान है, जिसको मनुष्य ने नहीं बनाया, जिसका नाम किसी भाषा में नहीं है। उसका नाम मुख से उच्चारण नहीं किया जा सकता। मनुष्य उसको मन-बुद्धि से नहीं समझ सकता। वह मन और बुद्धि से परे है।

इस जीवन में समझने के लिए बहुत-कुछ है। हर दिन जो हम जीते हैं, इसमें हम क्या-क्या नहीं करते हैं! परंतु सबसे बड़ी बात यह है कि मूल चीज क्या है? ऐसी क्या चीज है, जिसको जानने से, जिसको समझने से हमारे जीवन के अंदर शांति हो? ऐसी शांति नहीं, जो मन की बनाई हुई हो। कई लोग इस बात को सरल तरीके से नहीं समझ पायेंगे कि मन की बनाई हुई शांति क्या है? पर समझने की बात है कि मन का क्या-क्या बनाया हुआ है? क्या-क्या असली है और क्या-क्या मन का बनाया हुआ है? इन दोनों चीजों में फर्क क्या है?

एक फर्क तो यह है कि किसी विषय को समझाते हुए भगवान कृष्ण कहते हैं कि यह मन और बुद्धि से परे है। एक चीज तो ऐसी हुई, जिसको आप मन या बुद्धि से नहीं समझ सकते और एक ऐसी चीज हुई, जो मन ने बना रखी है, जिसके पीछे दुनिया दौड़ती है। एक वह भगवान है, जिसको मनुष्य ने नहीं बनाया, जिसका नाम किसी भाषा में नहीं है। उसका नाम मुख से उच्चारण नहीं किया जा सकता। उसको मनुष्य मन-बुद्धि से नहीं समझ सकता। वह न स्त्रीलिंग में आता है, न पुल्लिंग में आता है। न उसको नापा जा सकता है, न उसको तौला जा सकता है। न उसकी कोई परिभाषा है, न उसकी कोई परिभाषा कर सकता है। उसको इन आँखों से देखा नहीं जा सकता है। उसको इन आँखों से पहचाना नहीं जा सकता है। भगवान श्रीकृष्ण इसीलिए कहते हैं कि ''अर्जुन! तू मुझे इन बाहरी नेत्रों से नहीं देख सकता। इसलिए मैं तुझको दिव्य चक्षु देता हूं, जिससे तू मुझको देख सके।''

समझने की बात है कि हमने तो अपने जीवन में भगवान की परिभाषा बना दी, भगवान को चेहरा भी दे दिया। भगवान को नाप तौल भी लिया। उसके हाथ भी बना दिए। हाथ से वह क्या करता है? कहीं कुछ करता है, कहीं कुछ करता है। अभी, थोड़े महीने पहले भूकंप आया, जिसमें कितने ही लोग मर गये। कुछ ऐसे भी थे, जो उसके बारे में कह रहे थे कि ''भगवान तुमसे रूठ गये हैं। उन्होंने अपना पैर नीचे मारा है, उससे भूकंप आ गया।'' मतलब, जिस भगवान को मनुष्य ने अपनी ही कल्पना से बनाया है, वह हँसता भी है, क्रोधित भी होता है। उसको प्रसन्न करने के लिए इतने मंदिर बने हुए हैं कि वहां जाओ, उसकी पूजा करो, पाठ करो। इससे भगवान प्रसन्न होंगे। यही तो कहा जाता है न कि भगवान को प्रसन्न करो? इसका मतलब है कि भगवान का मूड हमेशा खराब रहता है। इसलिए वहां जाकर तुम लड्डू चढ़ाओ, पेड़ा चढ़ाओ, केला चढ़ाओ, कुछ प्रसाद चढ़ाओ, तब भगवान प्रसन्न होंगे। तो मनुष्य ने भगवान को अपने मन से बनाया ही नहीं, बल्कि उसका मूड भी बनाया है। भगवान का मूड भी क्या बनाया? अच्छा नहीं, खराब। यह नहीं कि उसका मूड हमेशा अच्छा रहता है। नहीं। उसका मूड हमेशा खराब रहता है। तुम जाओ, यह करो, वह करो, तब भगवान का मूड ठीक होगा।

लोगों की मान्यताएं हैं। मैं लोगों की मान्यताओं को बदल नहीं सकता हूँ। मैं एक बात आगे रख सकता हूँ कि सोचो। एक समय था, जब मनुष्य नहीं था, परंतु वह शक्ति थी। उसी शक्ति के कारण पृथ्वी बनी। उसी शक्ति के कारण तारे बने। उसी शक्ति के कारण सूरज बना। उसी शक्ति के कारण पानी बना। उसी शक्ति के कारण सारी चीजों की रचना हुई और उसी शक्ति के कारण मनुष्य बना। तो मनुष्य बाद में आया।

पहले वह शक्ति थी

कोई आपको यह समझाने की कोशिश करे कि जब आप पैदा नहीं हुए थे और आपकी पत्नी पैदा नहीं हुई थी, तब आपका बच्चा पैदा हुआ था। यह बात कैसे समझ में आयेगी? जब आप नहीं थे और आपकी पत्नी भी नहीं थी तो आपका बच्चा कहां से आया? यह कैसे संभव है? पहले यह जरूरी है कि माता-पिता हों, उसके बाद ही बच्चा होगा। उसी प्रकार उस शक्ति का होना जरूरी है। बिना उस शक्ति के आप यहां कहां से आ गये? जब वह शक्ति थी और आप नहीं थे, तब उस शक्ति का क्या नाम था? क्या थी वह चीज? किस नाम से उसे पुकारते थे? जब मंदिर नहीं थे तो उसकी पूजा कैसे होती थी? जब पत्थर ही नहीं थे, तब उनकी मूर्ति कहां से बनती? जब फूल ही नहीं थे तो फूल कौन चढ़ाता? जब केले या कोई फल ही नहीं थे, तो उसे प्रसाद कौन चढ़ाता? आप सब समझ रहे हैं न मेरी बात?

तो पहले वह शक्ति थी। ये सारी चीजें बाद में हुईं। बात यह है कि आप उस शक्ति को जानना चाहते हैं या नहीं? अगर आपका मन 'हां' कहेगा, तो मन उसको समझ नहीं सकता, क्योंकि वह चीज मन और बुद्धि से परे है। इसलिए मन और बुद्धि उसको समझ नहीं सकती। पर हृदय एक ऐसी चीज है, जहां से उसको जानने की पुकार आती है। जब मनुष्य अपने जीवन में उस पुकार को स्वीकार करता है, तब वह जिज्ञासु बनता है, उसके अंदर सचमुच में जिज्ञासा जगती है। वह मन और बुद्धि की जिज्ञासा नहीं है। वह उस चीज को पाने की, उस

हृदय स्थित शक्ति के अनुभव का अभाव मन नहीं समझ सकता, बुद्धि नहीं समझ सकती। क्योंकि जब बुद्धि उसको समझ ही नहीं सकती, जानती ही नहीं है तो उस चीज का अभाव कैसे समझेगी?

चीज को समझने की, उस चीज का अनुभव करने की जिज्ञासा है, जिससे हृदय तृप्त होता है। जिसका अभाव मन नहीं समझ सकता, बुद्धि नहीं समझ सकती। क्योंकि जब बुद्धि उसको समझ ही नहीं सकती, जानती ही नहीं है तो उस चीज का अभाव कैसे समझेगी?

अगर मैं आपसे कहूं कि ऐसी चीज का नाम बताइए, जिसको आप जानते ही नहीं, मुझे ऐसे आदमी का नाम बताइए, जिसको आप जानते ही नहीं हैं तो कैसे कहेंगे? मैं आपसे कहूं कि आप ऐसा गाना सुनाइए, जिसको आप जानते ही नहीं हैं तो कैसे सुनाएंगे? अगर मैं आपसे कहूं कि आप ऐसी चीज को छूइये, जिसको आप छू नहीं सकते हैं तो कैसे छुएंगे? जहां तक दुनिया का सवाल है, यहां तो आप सारी चीजें छू सकते हैं। परंतु वह चीज कहां मिलेगी, जिसको आप छू नहीं सकते? वह चीज आपके अंदर है।

प्यार को समझिए!

समझने की बात है कि ऐसी क्या चीज है, जो आपके अंदर है? उसकी पुकार को जानना, उसकी पुकार को समझना, उसके अभाव को समझना, मन और बुद्धि का विषय नहीं है। उस पुकार को हृदय समझ सकता है। हृदय उसके अभाव को समझता है। हृदय उसके अभाव को महसूस करता है, अनुभव करता है और उसको जानने की इच्छा प्रकट करता है। यही है जिज्ञासा! जब गुरु महाराज जी की कृपा होती है तो मनुष्य उसको जान लेता है। जैसे कहा है कि —

एक समय था, जब मनुष्य नहीं था, परंतु वह शक्ति थी। उसी शक्ति के कारण पृथ्वी बनी। उसी शक्ति के कारण तारे, सूरज, पानी बना। उसी शक्ति के कारण सारी चीजों की रचना हुई और उसी शक्ति के कारण मनुष्य बना। तो मनुष्य बाद में आया।

कुम्भ का बांधा जल रहे, जल बिन कुम्भ न होय।
ज्ञान का बांधा मन रहे, गुरु बिन ज्ञान न होय॥

जब मनुष्य इस चीज को जान लेता है तो दूसरी चीज क्या होनी चाहिए? उससे प्यार होना चाहिए। जबतक उससे प्यार नहीं होगा, तबतक आप समझ नहीं पाएंगे कि भक्ति क्या होती है, मोहब्बत क्या होती है। जिसने कभी मोहब्बत ही नहीं की, वह कैसे समझेगा कि मोहब्बत क्या होती है? जिसने अपने जीवन में प्यार ही नहीं किया, वह क्या समझेगा कि प्यार क्या होता है?

मैं उदाहरण देता हूं। जब बच्चे छोटे होते हैं, अगर उनसे पूछा जाता है कि "क्या तुम बड़े होकर शादी करोगे?" तो कहते हैं, "नहीं, छी!" क्यों कहते हैं? क्योंकि उनको अभी बात समझ में नहीं आई है। परंतु जब वे बड़े हो जाते हैं तो किसी से मोहब्बत हो जाती है। उसी प्रकार बात हो रही है भक्ति की। अगर भक्ति को समझना है तो प्यार को समझना पड़ेगा। क्योंकि आप प्यार को समझ सकते हैं, भक्ति को आसानी से नहीं समझ सकते हैं। क्योंकि आपने प्यार किया है। अगर किसी से नहीं किया है तो किसी चीज से तो अवश्य किया है। जिस चीज से आपको प्यार हो जाता है, उसकी आप कद्र करते हैं और जिससे प्यार नहीं होता है, उसकी कद्र नहीं करते हैं।

आप दुश्मन से प्यार नहीं करते हैं। अगर दुश्मन आपको चिट्ठी भेजे तो आप उसको फाड़ देंगे। पर जिससे आप प्यार करते हैं, अगर वह आपको चिट्ठी भेजेगा तो उसको बड़े अच्छे तरीके से संभालकर कहीं रखेंगे। अगर दुश्मन आपको फूल भेजेगा तो आप उसको तोड़-मरोड़कर कूड़ेदान में डाल देंगे, परंतु अगर कोई ऐसा आदमी आपको फूल भेजे, जिससे आप प्यार करते हैं तो उसे कितने ही साल तक कहीं उसको सुखाकर अपनी किताब में रखेंगे, ताकि कहीं खराब न हो जाये। इन चीजों में क्या अंतर है? एक की कद्र है और दूसरे की कोई कद्र नहीं? क्यों एक को बचाकर रखना चाहते हैं और एक को फेंकना चाहते हैं? प्यार के ही कारण तो?

क्योंकि जब एक चीज से मिलन होता है, जिससे प्रेम होता है तो हृदय के अंदर आनंद होता है। उसी प्रकार जब उस शक्ति से मिलन होता है, तब हृदय के अंदर शांति होती है। सचमुच में वह शक्ति सब जगह है, सर्वव्यापक है; जिसके लिए कोई ऊपर नहीं है, नीचे नहीं है; आज नहीं है, कल नहीं है, परसों नहीं है, कुछ नहीं है। वह शक्ति पहले भी थी, अब भी है और आगे भी रहेगी। वह अ-काल है। जिसका कोई अंत नहीं है। इस सृष्टि की शुरुआत हुई तो संभव है कि इस सृष्टि का अंत भी होगा। परंतु उस शक्ति की कोई शुरुआत नहीं

हुई है और उसका कभी अंत भी नहीं होगा। जब हृदय उससे मिलेगा तो आनंद ही आंनद मिलेगा। वह शक्ति कहां है? वह हृदय में ही है। उसकी प्यास भी हृदय में ही है और उस प्यास को मिटाने वाली शक्ति भी हृदय में ही है। परंतु जब गुरु महाराज जी की कृपा से ज्ञान मिलता है तो ज्ञान के द्वारा हृदय को उसका अहसास होता है।

प्रेम करो तो ऐसा ही करो!

आँखें कहां हैं? यहां हैं। चेहरा कहां है? वह भी यहां है। परंतु आईने की जरूरत है। आईने को देखने के लिए आँखों की जरूरत है और आँखों को देखने के लिए आईने की जरूरत है। आईने में जो परछाईं है, उसको देखेंगे तो आपको अपना ही चेहरा दिखाई देगा, किसी दूसरे का नहीं। अपना ही चेहरा दिखाई देगा। इसी को ''अपने आपको जानना'' कहते हैं। जो चीज आपमें हैं, उसको जानो। अपने आपको जानो। अपने आपको अगर जानेंगे तो जो आपके अंदर चीज है, उसको भी जानेंगे। जब उसको जान जाएंगे तो उससे जो प्यार करेंगे, उससे जो मोहब्बत करेंगे, वहां से चालू होती है — भक्ति!

गुरु के बिना यह संभव नहीं है कि आप जान पाएं। जब गुरु महाराज जी ज्ञान देते हैं, तब उस चीज का मिलन होता है। जब उसका मिलन होता है, तब प्रेम जागता है। जब प्रेम जागता है, उसी को भक्ति कहते हैं। भक्ति वहां से चालू होती है। गुरु महाराज जी समझाते हैं कि असली भक्ति क्या है। भक्ति! प्रेम! असली प्रेम! नकली प्रेम नहीं, असली प्रेम! ऐसा प्रेम, जो अटूट हो, जिसमें आप यह नहीं देखते हैं कि मेरी मर्जी और इसकी मर्जी में कितना अंतर है।

जब दो के बीच में पहले प्रेम होता है तो सारी मर्जियां खत्म हो जाती हैं। जब प्रेमी एक-दूसरे से कहता है, ''चलो, वहां चलते हैं।'' ''ठीक है।'' जब पहला-पहला प्रेम होता है तो कुछ दिखाई नहीं देता है। सिर्फ वही दिखता है, जिससे प्रेम है। हमेशा उसी का चिंतन। जब जाग रहे हैं, तब भी उसका चिंतन है। जब सो रहे हैं, तब भी उसका चिंतन है। उठते हैं, तब भी उसका चिंतन है। सोने के लिए जाते हैं, तब भी उसका चिंतन है। खाने के लिए बैठते हैं, तब भी उसका चिंतन है।

संत-महात्माओं ने अन्य दूसरी बात नहीं कही, उन्होंने कि प्रेम करो तो ऐसा ही प्रेम करो। कई संत-महात्मा तो बाल ब्रह्मचारी थे तो उन बेचारों को पता भी नहीं होगा कि दुनिया के लोग इसी बात को मोहब्बत कहते हैं। उसी प्रकार की उससे मोहब्बत करो, कि जब उठे तो उसी का ध्यान आये, सोचे तो उसी का ध्यान आये, खाये तो उसी का ध्यान आये, नहीं खाये तो उसी का ध्यान आये, जो तुम्हारे अंदर अविनाशी है। हमेशा उसी का ध्यान। उस प्रेम में फिर मर्जियां नहीं रहती हैं कि मेरी मर्जी क्या है और तुम्हारी मर्जी क्या है। मर्जी जो है, वह एक ही बन जाती है। जब लोग मंदिरों में जाते हैं तो कई लोग समझाते हैं कि ''भगवान के पास जाओ। यह करोगे, वह करोगे तो तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।'' यहीं तो गड़बड़ है। उस प्रेम में आपको मनोकामना करने की जरूरत नहीं है। प्रेम दोनों में होना चाहिए कि आपका हृदय उस शांति की आस लगाये बैठा है और आप अपने हृदय को प्रसन्न करने के लिए तैयार हैं। यह नहीं कि अभी मुझको यह करना है, वह करना है। लोग इसी में लग जाते हैं, ''अभी टाइम नहीं है, हमारा schedule क्या है? हमारा यह क्या है, हमारा वह क्या है?'' जब एक बार प्रेम की डोर बंध जाये, भक्ति की डोर बंध जाये तो वह बंधी रहनी चाहिए। जो आपको करना है, कीजिए। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, पर ध्यान वहीं रहना चाहिए।

जैसे बच्चे का ध्यान अपने मां-बाप पर रहता है और मां-बाप का ध्यान अपने बच्चे पर रहता है। जहां ध्यान टूटा, वहीं गड़बड़ होगी। चाहे कुछ भी हो रहा हो, बच्चे का ध्यान मां पर रहता है। प्यार क्या है? जब छोटा होता है तो क्या बच्चा अपनी मां को उसके नाम से बुला सकता है? अभी वह कोई भाषा नहीं बोल सकता है, परंतु मां तैयार रहती है। उसको मालूम है कि बच्चा अभी सो रहा है। जब वह सोकर उठेगा तो दूध मांगेगा। वह तैयार रहती है। प्यार क्या होता है? आप इस बात को समझें। बच्चा अभी सोया हुआ है, पर मां को मालूम है, मां के शरीर को मालूम है कि यह उठेगा और दूध मांगेगा। तो क्या होता है? दूध अपने आप चलने लग जाता है। क्यों? इसी को प्रेम कहते हैं। यह है बच्चे और मां के बीच में प्रेम। एकदम तैयार। जैसे ही बच्चा उठता है, उसको लगा लेती है। बच्चा सपने किस चीज के देखता है? क्या कभी छोटे बच्चे को सोते हुए आपने देखा है? आपको यह कैसे मालूम पड़े कि क्या सपना देख रहा है? आप बच्चे के मुंह की तरफ देखिए। कई बार उसका मुंह वैसे ही चलता है, जैसे वह दूध पी रहा हो। क्योंकि यही उसकी दुनिया है। अभी वह रीति-रिवाज कुछ नहीं जानता।

जब एक चीज से मिलन होता है, जिससे प्रेम होता है तो हृदय के अंदर आनंद होता है। उसी प्रकार उस शक्ति से मिलन होता है, तब हृदय के अंदर शांति होती है।

आज की दुनिया गोत्र के पीछे पड़ी हुई है। इस बच्चे के लिए कोई गोत्र नहीं है। क्या मनुष्य ने समझा है? कई बार हमने ऐसा किस्सा सुना है कि घर में आग लग गई। छोटा बच्चा घर में ही था। आग ऐसी लगी कि कोई जा नहीं सका और कुत्ता गया और बच्चे को उठा लाया। उसने बच्चे की जान बचा ली। आप क्या समझते हैं? बचाने वाला बड़ा होता है या मारने वाला बड़ा होता है? बचाने वाला बड़ा होता है। उस समय वह कुत्ता मनुष्य से बड़ा हो गया। यही कहा है न कि —

हित अनहित पशु पक्षिय जाना।
मानुष तन गुन ज्ञान निधाना॥

अगर आप कुछ भी कर रहे हैं, परंतु वह नहीं कर रहे हैं, जिसके लिए आप हैं तो फायदा क्या है? उससे आपको क्या मिलेगा?

गुरु का काम!

एक उदाहरण है, जैसे दूध है। दूध में पानी होता है। अब उसमें चीनी मिला लें। उसमें कोई कुछ कर ले, पर दूध तो दूध ही है। उससे खाना नहीं पका सकते। उसको मटके में जमाएंगे तो क्या होगा? दही बन जायेगी। पानी अलग हो जायेगा और दही बन जायेगी। दही को खा सकते हैं। दही में फ्रूट भी डाल सकते हैं, चीनी भी डाल सकते हैं, नमक भी डाल सकते हैं, उसे खा सकते हैं। परंतु उससे कुछ पका नहीं सकते। उस दही को बिलोएंगे तो क्या होगा? मक्खन निकलेगा और जो बच जायेगा, वह बचेगा — मट्ठा! ऊपर-ऊपर क्या निकलेगा? मक्खन। अभी भी उससे खाना बनाना इतना आसान नहीं है। उसको खाने में डाल सकते हैं, रोटी पर डाल सकते हैं, पर उसमें खाना बनाना इतना आसान नहीं है। क्योंकि उसमें अभी पानी बहुत होता है। उसमें खाना बनाने की कोशिश करेंगे तो जबतक उसका पानी न निकल जाये, इंतजार करना पड़ेगा। परंतु अगर उस मक्खन को गरम करेंगे तो क्या बनेगा? जब उसका सबकुछ निकल जायेगा, तब वह बनेगा घी। अब उसकी प्रकृति बदल गयी है। उसको कच्चा भी खा सकते हैं, उसमें नमक भी डाल सकते हैं, उसमें चीनी भी डाल सकते हैं, उससे मिठाई भी बना सकते हैं। उसकी प्रकृति बदल गई। अब उससे बहुत कुछ कर सकते हैं। ऐसे ही मनुष्य की प्रकृति भी बदलनी है। क्या है मनुष्य? मनुष्य है दूध। उसमें अच्छाई भी है और बुराई भी है। पानी भी है और वह चीज भी है, जो उसको खूब ताकत दे सकती है, परंतु मिली हुई है।

गुरु का काम क्या होता है? जैसे जौहरी हीरे को चमकाता है, वैसे ही गुरु मनुष्य रूपी हीरे को चमकाता है। आप भी हीरे के पत्थर हैं। चमकते नहीं है। क्या आपने अपनी जिंदगी में कभी हीरे का पत्थर देखा है? जब वह खान से खोदकर निकाला जाता है तो चमकता नहीं है। ऐसा लगता है, जैसे सचमुच में वह शीशा हो। परंतु जिसको उसकी परख है, वह उसको देखता है कि यह शीशा नहीं है, हीरा है। वह जौहरी उसको काटता है, फिर उसको चमकाता है। जब जौहरी उसको चमकाता है तो वह हीरा इतना चमकता है, इतना चमकता है कि पूछो मत! गुरु भी यही करता है। असली गुरु यही करता है। मनुष्य रूपी पत्थर को चमकाता है। उस पत्थर के अनावश्यक हिस्सों को, जिनकी जरूरत नहीं है, उनको काटता है। पर एक बात जरूर है कि वह हीरा होना चाहिए। चाहे पत्थर की क्यों न हो, पर होना चाहिए — हीरा! अगर उसमें छल-कपट भरा हुआ है तो वह हीरा नहीं है। कोई भी गुरु हो, उसको हीरा नहीं बना सकेगा। इसीलिए कहा गया है —

गुरु बेचारा क्या करे, जो सिष्ये माहीं चूक।
भावै ज्यों परमोधिये, बाँस बजाई फूँक॥

अगर किसी को दही को बिलोते हुए देखेंगे तो बाहर से तो देखने में लगता है कि एक लंबी-सी मथनी है, उसमें रस्सी बंधी हुई है, दो हैण्डल होते हैं और उसमें मथते हैं तो उसमें से मक्खन निकलता है। परंतु मटके के अंदर दही तो होनी चाहिए? कई लोग छल-कपट से ज्ञान प्राप्त करते हैं तो अपने से ही छल करते हैं। क्या छल करते हैं? सबसे बड़ा छल यह है कि — "मेरे पास टाइम नहीं है।" अरे, अगर आपको जीते-जागते

जो चीज आपमें हैं, उसको जानिये। अपने आपको जानिये। अपने आपको अगर जानेंगे तो जो आपके अंदर चीज है, उसको भी जानेंगे। जब उसको जान जाएंगे तो उससे जो प्यार करेंगे, उससे जो मोहब्बत करेंगे, वहां से चालू होती है – भक्ति!

परमेश्वर से मिलने का टाइम नहीं है, जो हमेशा-हमेशा आपके हृदय में है, तो आप कैसे मनुष्य हैं? जो मनुष्य है, वह जानना चाहता है। उसके हृदय में प्यास है। जिसके हृदय में वह प्यास है तो उसको वह पूरा करने की कोशिश करेगा। अगर वह अपनी प्यास को तृप्त करने की कोशिश करेगा तो उसके लिए ज्ञान का अभ्यास करने का भी टाइम है, उसके लिए सब चीजों का टाइम है। वरना, मनुष्य के पास किस चीज के लिए टाइम है?

क्या ईर्ष्या के लिए टाइम है, द्वेष के लिए टाइम है, क्रोध के लिए टाइम है? क्या एक-दूसरे की चुगली करने के लिए टाइम है? क्या एक-दूसरे की डोरी काटने के लिए टाइम है? क्या किसी के लिए बुरा काम करने के लिए टाइम है? मनुष्य के पास बुरे काम के लिए, टाइम को बरबाद करने के लिए, हमेशा टाइम रहता है। अगर कोई किसी का खून करने के लिए जाता है तो यह थोड़े ही कहता है कि हमारे पास टाइम नहीं है? उसका सोचना बंद हो जाता है। वह कोई निर्णय नहीं ले पाता है कि मैं जो करने जा रहा हूं, वह अच्छा काम है या बुरा काम है। जब आदमी यही नहीं सोच सकता कि मैं क्या करने जा रहा हूं तो वह कैसा आदमी है? वह तो समझ लीजिए एक रोबोट है। उसको कोई दूसरा चला रहा है और वह चल रहा है। उसको नहीं मालूम कि इसका परिणाम क्या होगा।

डोरी किसके हाथ में है?

अब लोग कहते हैं कि "जी, मनुष्य तो एक कठपुतली है। उसकी डोरी भगवान के हाथ में है। भगवान जैसा नचाता है, वह वैसे ही नाचता है।" अगर सचमुच में यह बात है कि मनुष्य कठपुतली है — पहली बात तो यह है कि मनुष्य कठपुतली है या नहीं है? अगर यह माना जाये कि आप कठपुतली हैं तो इसका मतलब है कि डोरी है। अगर डोरी है तो कोई उसको चला रहा है और आप चल रहे हैं। मतलब, सारा ही संसार कुछ न कुछ तो करता रहता है न? तो आप चलते हैं, हिलते हैं, आपके हाथ भी ऊपर-नीचे हो रहे हैं, आपके पैर भी ऊपर-नीचे हो रहे हैं। आपकी गर्दन भी मुड़ रही है। सबकुछ चल रहा है। प्रश्न यह उठता है कि डोरी किसके हाथ में है? भगवान के हाथ में है या शैतान के हाथ में है? अगर आज आप दुनिया की हालत देखें तो यह नहीं लगता है कि मनुष्य के जीवन की डोरी भगवान के

हाथ में है। यह संभव ही नहीं है कि डोरी भगवान के हाथ में है। पर एक बात जरूर संभव है कि डोरी शैतान के हाथ में है। कैसे पड़ गई शैतान के हाथ में? यह नहीं मालूम, पर डोरी उसी के हाथ में है। वही सबकुछ करवा रहा है। क्योंकि मनुष्य की कद्र न करनेवालों को आज मैडल मिलता है। यह भगवान का काम तो हो ही नहीं सकता। ऐसा काम एक ही करवा सकता है — वह है शैतान!

लोग दुनिया को यह नहीं समझाते हैं कि यह पृथ्वी हमारी है। इस पृथ्वी पर हम जितने भी रहते हैं, हम सब इस पृथ्वी के नागरिक हैं और इस पृथ्वी के प्रति हमारा फर्ज बनता है कि हम इसकी देखभाल करें। जो इस पृथ्वी पर रहते हैं, हम सबका फर्ज बनता है कि हम एक-दूसरे की देखभाल करें। यह नहीं सिखाते हैं। अगर डोरी भगवान के हाथ में होती तो यह कठपुतली एक-दूसरे से यही बात करती। पर क्योंकि डोरी शैतान के हाथ में है, इसलिए वह कहता है, ''उड़ा दो।'' जब दोनों ही उड़ाने की बात करेंगे तो दोनों में लड़ाई होगी। एक-दूसरे को धमकाएगा — ''मैं तुझको उड़ा दूंगा। नहीं, मैं तुझको उड़ा दूंगा।'' फिर बीच में सब डरेंगे और कोई बैठा-बैठा मुस्करायेगा। भगवान नहीं मुस्करायेगा, बल्कि शैतान मुस्करायेगा।

मैं नहीं मानता कि आप कठपुतली हैं, पर अगर आप समझते हैं कि आप कठपुतली हैं तो आपको अपनी जिंदगी की डोरी भगवान के हाथ में थमानी चाहिए, शैतान को नहीं। अगर आपको बुद्धि है और एक सेकेण्ड का टाइम भी मिल जाये तो अपनी डोरी शैतान के हाथ से हटाकर भगवान के हाथ में थमा दीजिए। आप भी बदल जाएंगे और यह संसार भी बदल जायेगा। अगर अपनी जिंदगी में कुछ करना है तो कम से कम यह काम जरूर कीजिए।

प्रेम कीजिये तो ऐसा ही प्रेम कीजिये कि जब उठें तो उसी का ध्यान आये, सोचें तो उसी का ध्यान आये, खायें तो उसी का ध्यान आये, नहीं खायें तो उसी का ध्यान आये, जो आपके अंदर अविनाशी है।

भक्ति में कितना आनंद है!

मैंने जहां तक देखा है, सबको शांति चाहिए। कोई ऐसा नहीं है, जिसको शांति नहीं चाहिए। सबको शांति चाहिए, पर क्यों नहीं है? क्योंकि अगर अपने अंदर वाले से प्रेम नहीं है, अपने स्वांस से प्रेम नहीं है, स्वयं के

सचमुच में वह शक्ति सब जगह है, सर्वव्यापक है; जिसके लिए कोई ऊपर नहीं है, नीचे नहीं है, आज नहीं है, कल नहीं है, कुछ नहीं है। वह शक्ति पहले भी थी, अब भी है और आगे भी रहेगी। वह अकाल है। जिसका कोई अंत नहीं है।

जीवन से प्रेम नहीं है तो अशांति अपने आप होगी। जब ज्ञान मिल जाता है तो उसे प्रेमी कहते हैं। यह आज की बात नहीं है। बहुत पुरानी बात है। यही रिवाज रहा है कि जब ज्ञान मिल जाता है तो उस व्यक्ति को प्रेमी कहते हैं। प्रेमी! किसका प्रेमी? इस ज्ञान का प्रेमी, इस स्वांस का प्रेमी, इस अनुभव का प्रेमी। जो अपने जीवन में उस अनुभव को स्वीकार करता है — वह है भक्त! गुरु महाराज जी के प्रति प्रेम करना ही भक्ति है। क्योंकि उन्होंने ही सच्चा मार्ग दिखाया।

भक्तिमार्ग में कितना आनंद है! और कुछ नहीं है। यह नहीं है कि "आपको यह करना है, वह करना है; आपको यह करना चाहिए, वह करना चाहिए; वहां जाओ, यह करो, वह करो।" नहीं, आप जहां हैं, वहीं आनंद लीजिए। जेल में भी लोग भक्ति करते हैं। भक्ति एक ऐसी चीज है कि कहीं भी कर सकते हैं। क्योंकि भक्ति अनुभव करने की चीज है, आनंद लेने की चीज है।

जीवन है। आज है, कल का कोई भरोसा नहीं है। मनुष्य यह नहीं चाहता है। मनुष्य चाहता है कि उसको यह मालूम हो कि कल क्या होगा। मनुष्य को यह बात कभी भी अच्छी नहीं लगती कि कल क्या होगा, उसका कोई भरोसा नहीं है। उस पर उसका कोई कंट्रोल नहीं है कि कल क्या होगा। उसको कंट्रोल करने के लिए मनुष्य ने क्या-क्या साधन नहीं अपनाये हैं कि मैं कंट्रोल कर सकूं कि कल क्या होगा। पर वह कर नहीं सकता। कल क्या होगा, किसी को नहीं मालूम। सारी चीजें कंट्रोल करते हुए भी कंट्रोल में नहीं होंगी। पर क्या चीज कंट्रोल में है? चाहे कुछ भी हो, अपने हृदय को आनंद से भरना — यह आपके कंट्रोल में है। इस शक्ति को समझना कि मेरे अंदर अभी यह स्वांस आया और मैंने इस स्वांस के अंदर जो आनंद है, उसको अपनाया — यह आपके कंट्रोल में है। बस! "मैं सफल हो गया", भक्त के लिए सफलता की परिभाषा यही है। दुनिया की नहीं। दुनिया तो अच्छे-अच्छों को हांक रही है। यह तो वैसी ही बात हो गई कि दुनिया है, जो कहती है कि "आगे बढ़ो, बड़ा बनो; आगे बढ़ो, बड़ा बनो।" और जैसे ही आगे बढ़ते हैं, गरदन काट देती है, नाक काट देती है। छोटे लोगों की नाक नहीं कटती है। किसी बेचारे ने चाय की दुकान खोली और उसकी चाय की दुकान नहीं चली, तो उसकी नाक नहीं कटेगी। किसी ने बाईसाइकिल की दुकान खोली और वह नहीं चली तो उनके बारे में किसी को नहीं मालूम। उनकी नाक नहीं कटेगी। परंतु जो बड़े-बड़े हैं, उन्हीं की नाक कटती है। जो भक्त है, उसकी नाक कभी नहीं कटती है।

मैं अमेरिका में था। एक दिन एक औरत आई। उसके पास रॉल्स रॉयस कार थी। उसने कहा कि "आप इसको ले लीजिए।" मैंने कहा, "क्यों?" उसने कहा कि "मैं तो प्रेमी हूं। क्या यह ठीक है कि मेरे पास रॉल्स रॉयस है और आपके पास रॉल्स रॉयस नहीं है?" मैंने कहा कि "तुम प्रेमी हो तो इसका क्या मतलब है? इसका

रॉल्स रॉयस से क्या लेना-देना है ? तुमको यह पसंद है तो तुम इसको चलाओ। एक क्या, दस रखो। भक्ति का, प्रेम का इससे क्या मतलब ? मैं चाहता हूं कि तुम फूलो-फलो। क्या तुम यह समझती हो कि इससे मुझे ईर्ष्या होगी ? नहीं। तुम आनंद लो। अच्छी लगे तो रखो। एक नहीं, दो रखो, तीन रखो, चार रखो। जबतक तुम इस बात को समझती रहोगी कि तुम्हारे जीवन के अंदर सफलता क्या है — इस स्वांस के अंदर जो आनंद भरा है, इसको निचोड़ना, यह सफलता है। जबतक तुम यह करती रहोगी, इससे कुछ लेना-देना नहीं है। चाहे दस रॉल्स रॉयस हों, चाहे बीस हों, चाहे एक भी न हो। चाहे कुछ भी न हो, फिर भी आनंद ही आनंद रहेगा। इस स्वांस में छिपे हुए आनंद को निचोड़ लो।''

आज की चिंता करो!

लोगों के जीवन के अंदर दु:ख आते हैं। किसी की बेटी मर गई, किसी का बेटा मर गया; किसी की मां मर गई, किसी का बाप मर गया, तो लोगों को दु:ख होता है। हमको बहुत लोग चिट्ठी लिखते हैं कि हमारे साथ यह हुआ और अगर आपका ज्ञान नहीं होता तो पता नहीं हम कैसे जीते। मैं उस दु:ख को समझ सकता हूं, जो मैंने भी भोगा है, पर जिस दु:ख को मैंने भोगा ही नहीं, उस दु:ख को मैं क्या समझूं ? क्या मैं यह कहूं कि ''हां, मैं समझता हूं ?'' यह संभव नहीं है। अगर मैंने भोगा भी है तो उसका मतलब नहीं हैं कि जो दु:ख उसको हुआ है, वह दु:ख मुझे भी हुआ। यह भी संभव नहीं है। परंतु इतना मैं जानता हूं कि ज्ञान के कारण अंदर से एक शक्ति आती है। क्योंकि इसी को कहते हैं — भक्ति। भक्ति के कारण वह शक्ति आती है। आगे बढ़िए। कल की चिंता नहीं, आज की चिंता कीजिए कि आज क्या हो रहा है। दुनिया जो सारा ध्यान कल पर लगाती है, गुरु महाराज जी कहते हैं — ''अपना सारा ध्यान आज पर लगा दो। तुम्हारा कल अपने आप ठीक हो जायेगा।'' पर यह विधि दुनिया को नहीं मालूम। आपके अंदर वह चीज चल रही है। जबतक वह चल रही है, उसने आपका पीछा नहीं छोड़ा है। आपको भी उसका पीछा नहीं छोड़ना चाहिए। उस आनंद को पकड़िए। गुरु महाराज जी समझाते हैं, समझने की कोशिश कीजिए। आपके भले की बात है। और सब तो आपको अपनी-अपनी जिम्मेवारी समझायेंगे। क्या समझायेंगे ? उस चीज के बारे में समझायेंगे, जो चीज आप करना नहीं चाहते हैं। जो बच्चा खुद ही पढ़ने में दिलचस्पी रखता है, क्या उसको उसकी मां को कभी यह कहना पड़ेगा कि ''बेटा ! तुमको पढ़ना चाहिए ?'' ना। उस बच्चे को समझाना पड़ता है, जिसकी पढ़ने में दिलचस्पी नहीं है। उसको समझाते हैं, ''बेटा ! तुमको पढ़ना चाहिए। पढ़-लिखकर तुम बड़ा आदमी बनोगे।'' बात तो यह है कि बड़ा आदमी क्या बनेगा, पैसे कमायेगा। पैसे कमायेगा तो जब मां-बाप रिटायर्ड हो जायेंगे तो उनको दो टाइम अच्छे तरीके से खाने के लिए मिलता रहेगा। क्योंकि यही उनके बाप ने भी समझाया था। यही समझाया था, ''पढ़ोगे-लिखोगे तो तुम बड़ा आदमी बनोगे।'' जब आदमी बड़ा आदमी नहीं बनता है तो सोचता है कि मेरा बेटा बड़ा आदमी बनेगा।

बड़ा आदमी कौन है ? जिसके हृदय में दया है, वह है बड़ा आदमी। जैसे मैंने कहा, ''मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है।'' अगर वह कुत्ता आग के बीच गया, उसने बचा लिया तो वह कुत्ता तो आदमी से भी बड़ा हुआ ! आदमी देखता रह गया और कुत्ता अपनी जान को दाव पर लगाकर गया और बचा लिया। केवल आदमी के बच्चे को ही नहीं, बल्कि कई बार तो कुत्ता बिल्ली के बच्चे को भी बचा लेता है। उसमें इतनी दया है। इसको कहते हैं — दया। कहा है —

हित अनहित पशु पक्षिय जाना।
मानुष तन गुन ज्ञान निधाना॥

इस बात को समझिए। जब यह होगा, तब आप असली हीरे होंगे। जब गुरु महाराज के हाथ में आएंगे तो वे ज्ञान रूपी चाकू से काटकर, पॉलिश करके आपको चमका देंगे। अगर आप एक बार चमक जाएंगे, एक बार जो हीरा चमक गया, उसको दोबारा चमकाने की जरूरत नहीं रहती। हीरा एक ऐसी चीज है कि एक बार चमक गया तो उसको दोबारा चमकाने की जरूरत नहीं रहती है। वह सदियों तक चमकता रहता है। आप भी चमकिए। यही सत्संग रूपी पॉलिश है। इसीलिए गुरु महाराज जी कहते हैं कि आओ, पॉलिश कर देते हैं। जब पॉलिश हो जाती है तो चमक ही चमक हो जाती है। ❖

आपके जीवन के अंदर सफलता क्या है? इस स्वांस के अंदर जो आनंद भरा है, इसको निचोड़ना, यह सफलता है। इस स्वांस में छिपे हुए आनंद को निचोड़ लीजिये।

ज्ञान

ज्ञान की चर्चा!

मैं जिस ज्ञान की चर्चा करता हूं और देता हूं, आप इस ज्ञान के द्वारा अपना जीवन सफल कर सकते हैं। मैं जिस ज्ञान को देता हूं, उस ज्ञान का संबंध उसी चीज से है, जिसका कभी नाश नहीं होता है। अगर आप इस ज्ञान को समझ जाएं तो आपकी दुनिया बदल जायेगी। आपका संकोच दूर हो जायेगा। क्योंकि जब बात समझ में आ जाती है, जब पहचान हो जाती है, तब उससे प्रीत हो जाती है। जब प्रीत हो जाती है, तब फिर नाता बन जाता है। जब

नाता बन जाता है, तो मनुष्य कहीं भी हो, कहीं भी जाए, वह उस नाते से बंधा हुआ है। यह ज्ञान ऐसी जगह ले जाता है, जहाँ सारी चिंताएं खत्म हो जाती हैं। समय का कोई भेदभाव नहीं रहता है। मनुष्य अंदर से यह आभार महसूस करने लगता है कि ''हे भगवान! आपने मुझे इस ज्ञान को समझने के लिए जो जीवन दिया है, यह समय दिया है, इसके लिए आपको लाख-लाख शुक्रिया।''

हम भी जीते-जागते हैं और आप भी जीते-जागते हैं। आप सचमुच में अपना जीवन सफल कर सकते हैं। हम किसी धर्म की बात नहीं कर रहे हैं, किसी पुस्तक की बात नहीं कर रहे हैं। हम जीते-जागते मनुष्य की बात कर रहे हैं, आपकी बात कर रहे हैं।

आप इस बात को समझिए कि इस शरीर में परमात्मा विराजमान है। यह शरीर तो जायेगा, मिट्टी का बना है और मिट्टी में जाकर मिलेगा, यह मिट्टी बनेगा। वे सारी चीजें, जिन पर आप इतना विश्वास रखते हैं, इतना गर्व करते हैं, ये सारी चीजें यहीं की यहीं रह जायेंगी। इसलिए अगर अपना नाता जोड़ना है तो ऐसी वस्तु से जोड़िए, जो आपसे कभी जुदा न हो। मैं जिस ज्ञान को देता हूं, उस ज्ञान का संबंध उसी चीज से है, जिसका कभी नाश नहीं होता है। यह ज्ञान अपने जीवन को सफल बनाने के लिए है। अपने जीवन को पूरी तरह से सफल बनाने के लिए — आधा या चौथाई नहीं। यह ज्ञान ऐसी जगह ले जाता है, जहाँ सारी चिंताएं खत्म हो जाती हैं। समय का कोई भेदभाव नहीं रहता है। मनुष्य अंदर से यह आभार महसूस करने लगता है कि ''हे भगवान! आपने मुझे इस ज्ञान को समझने के लिए जो जीवन दिया है, यह समय दिया है, इसके लिए आपको लाख-लाख शुक्रिया।'' गुरु महाराज जी के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने की इच्छा होती है कि ''गुरु महाराज जी! आपने जो ज्ञान दिया है, उसके लिए आपको लाख-लाख धन्यवाद!''

ज्ञान आपकी सांसारिक जिंदगी के लिए नहीं है। सांसारिक जिंदगी जो आप जी रहे हैं, इस जिंदगी में आप जो कुछ भी करते हैं — आपका बिजनेस है, परिवार है, आपकी नौकरी है। ये सारी चीजें, जिनको आप अपना समझते हैं, ये आपकी अपनी नहीं है। संत-महात्माओं ने तो यहां तक भी कहा है कि शरीर भी आपका अपना नहीं है। यह समझने की बात है कि अगर शरीर भी आपका अपना नहीं है तो आप कौन हैं, आप क्या हैं? मतलब, आपने उल्टा समझ लिया। कैसे? आप गिलास की पहचान में, गिलास की कीमत में लग गए और उसका पानी नहीं पिया। लोग अपने घर को सजाने के लिए अच्छे-अच्छे गिलास रखते हैं, परंतु घर को सजाने के लिए गिलास नहीं होता है। वह पानी पीने के लिए होता है। जब कुआं खोदते हैं और जिस कुएं में से पानी नहीं निकलता है तो उसे क्या कहते हैं? गड्ढा। गड्ढे में और कुएं में अंतर क्या है? क्या आपने कभी सोचा? जब गड्ढे में से पानी निकले तो कुआं हुआ, वरना वह गड्ढा है। गुरु महाराज जी जीवन रूपी कुएं में ज्ञान रूपी पानी भरकर इसे सार्थक कर देते हैं, वरना ज्ञान रूपी पानी के बिना यह जीवन भी एक गड्ढे की तरह है। तुलसीदास जी ने कहा कि —

गुरु महाराज जी जीवन रूपी कुएं में ज्ञान रूपी पानी भरकर इसे सार्थक कर देते हैं, वरना ज्ञान रूपी पानी के बिना यह जीवन भी एक गड्ढे की तरह है।

नाम राम को कलपतरु, कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भयो भाँग तें, तुलसी तुलसीदास॥

भाँग एक प्रकार की जंगली-घास होती है। तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं भाँग की घास की तरह इस संसार

में निरर्थक भटक रहा था। प्रभु की कृपा से, उनके नाम के सुमिरण करने से मेरा जीवन सफल हो गया।

इस संसार के अंदर सुख-दुख सबके लिए है। मनुष्य को दुख इसलिए है, क्योंकि उसका ध्यान सुख की खान से हट जाता है। जब मनुष्य का ध्यान सुख के भण्डार से हटेगा तो उसको क्या मिलेगा? सिर्फ दुख ही तो मिलेगा! उस सुख की खान तक पहुंचने के लिए जो ज्ञान रूपी फावड़ा है, उसे कहां रखा? यह तो वैसी ही बात हो गयी कि अगर एक किसान अपने बीज को यह जानकर कि "ये बीज बड़े कीमती हैं, बहुमूल्य हैं, इसलिए मैं इनको जमीन में नहीं फेंकना चाहता हूं", वह उसे एक डब्बे में बंद करके तिजोरी में रख दे तो क्या होगा? कुछ नहीं होगा। परंतु अगर उन बीजों को वह अपनी जमीन में बोकर पानी दे, खाद दे और उसकी देखभाल करे तो उसको कभी बीज की कमी नहीं होगी। उसी प्रकार जो लोग अपने जीवन में इस स्वांस को नहीं समझते हैं और न वे समझना चाहते हैं, उनके लिए वैसा ही हो गया कि जीवन मिला और उसे एक डिब्बे में बंद कर दिया। क्या आप कभी इस बात का अहसास करते हैं कि आपकी जिंदगी भी एक डिब्बे में बंद है, ऊपर से ढक्कन लगा है? ढक्कन पर सील लगी है, ढक्कन के ऊपर से रस्सी लगी है और आप एक चींटी के समान हैं, जो इस डिब्बे में से बाहर निकलना चाहते हैं? आप अज्ञानता रूपी डिब्बे में बंद हैं। अज्ञानता कहां है और कहां नहीं है? अंधेरा कहां है और कहां नहीं है?

अंधेरा कहां है?

यह बात बड़ी सरल है। अगर आप अपने जीवन के अंदर उजाला चाहते हैं तो इस बात को समझना होगा कि अंधेरा कहां है। अंधेरा ठीक प्रकाश के पास है। जब प्रकाश आएगा तो अंधेरा जाएगा। जब प्रकाश जाएगा तो अंधेरा आएगा। दोनों एक-दूसरे के इतने करीब हैं कि आप इसके बारे में सोच भी नहीं सकते हैं कि इतना नजदीक हैं। उस जगह के लिए मनुष्य का एक बाल बहुत मोटा है। प्रकाश और अंधेरे में जो दूरी है, उस बाल से भी छोटी है। परंतु एक कानून है, जिसको अंधेरा नहीं तोड़ सकता। वह कानून क्या है? अंधेरा प्रकाश के बहुत पास तो जा सकता है, परंतु जहां प्रकाश है, वहां नहीं जा सकता। क्या मेरी बात समझे? अंधेरा प्रकाश के बहुत नजदीक तक पहुंच सकता है,

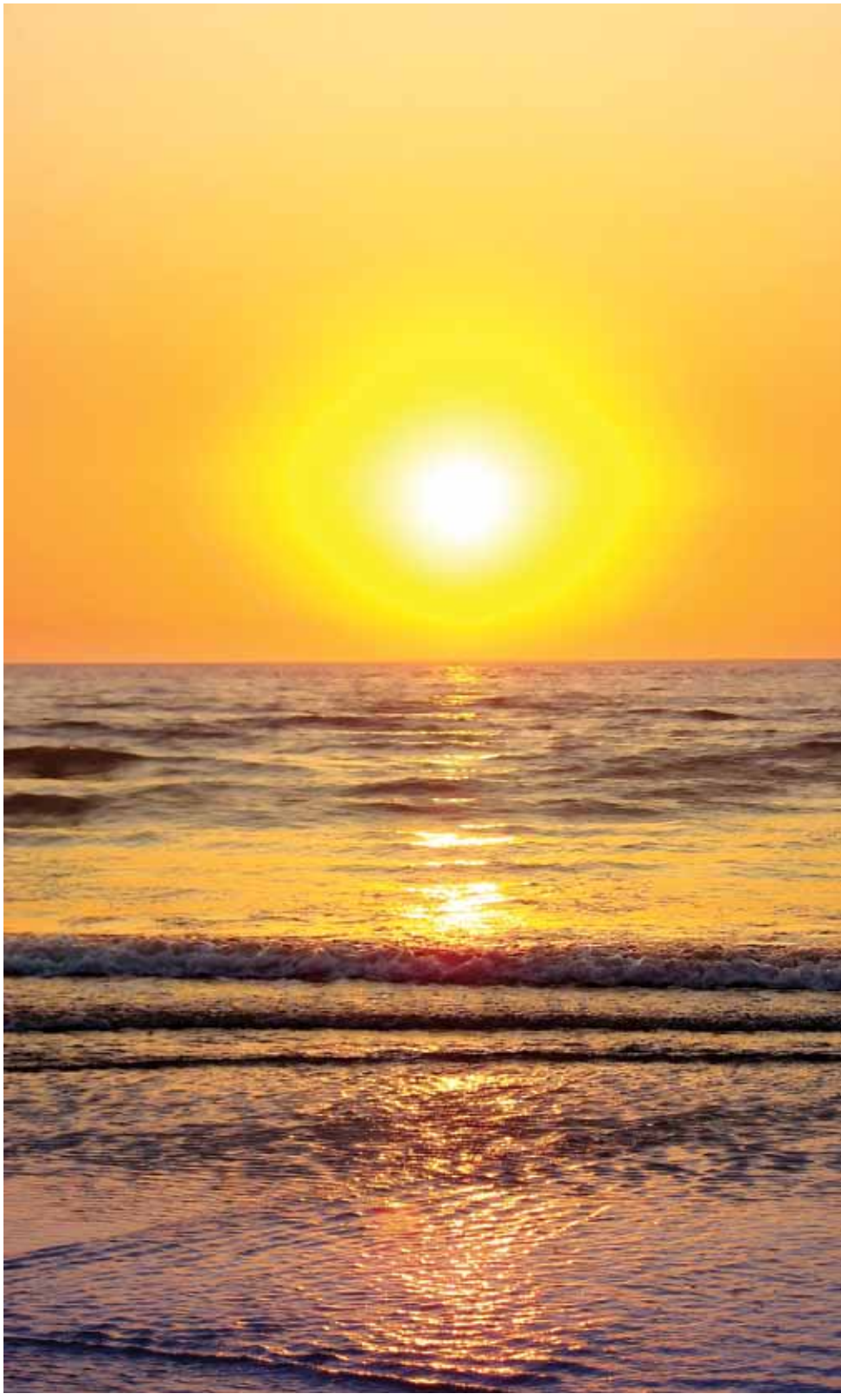

गुरु महाराज जी के पीछे चलना चाहिए, उनसे आगे नहीं। क्योंकि आगे-आगे चलेंगे तो पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा कि ठीक रास्ते पर जा रहे हैं या नहीं। पीछे मुड़कर देखेंगे तो आपको ठोकर लगेगी। परंतु अगर पीछे चलेंगे तो चिंता नहीं करनी पड़ेगी। जहां वे जा रहे हैं, वहां हम भी जा रहे हैं।

परंतु वहां नहीं जा सकता, जहां प्रकाश है। अगर आप इस विद्या को समझ जाएंगे तो आपके जीवन में भी प्रकाश ही प्रकाश हो जायेगा। आप तो इस चक्कर में पड़े हुए हैं कि ''जब मेरे जीवन में यह हो जायेगा, जब वह हो जायेगा, जब मेरे बच्चे बड़े हो जायेंगे, जब उनकी नौकरी लग जायेगी, जब वे जमीन खरीद लेंगे, जब उनके मकान बन जायेंगे, तब मेरे जीवन में प्रकाश होगा।'' परंतु गुरु महाराज जी कहते हैं कि अगर आप अंधेरे को दूर करना चाहते हैं तो एक मात्र ज्ञान रूपी छोटे-से दीये को जला दीजिये। ऐसा नहीं है कि उस दीये को जलाकर एक जगह छोड़कर कहीं चले जाइये। नहीं, जहां आप हैं, उस दीये को अपने हाथ में लेकर चलिये। आप जहां जायेंगे, वहीं प्रकाश हो जायेगा। मतलब तो आपको अपने से है। अब लोग कहते हैं, ''दुनिया का क्या होगा?'' वही होगा। हर एक के हाथ में दीपक होना चाहिए। परंतु अगर आप अपना दीपक बुझा देंगे, इसलिए कि ''दूसरे के हाथ में दीपक हो जाए तो आप उजाले में रह जायेंगे'', ऐसा नहीं है। सबके हाथ में दीपक होना चाहिए। गुरु महाराज जी उस दीपक को जलाकर आपको भी देने के लिए तैयार हैं। गुरु महाराज जी ज्ञान देकर यही करते हैं कि आपके हाथ में एक दीपक रख देते हैं, अपने ज्ञान से आपके दीपक को जला देते हैं।

आजकल नकली मोमबत्तियां भी मिलती हैं, जो बैटरी से जलती हैं। उन मोमबत्तियों में नीचे बैटरी लगती है। उनमें छोटा-सा एक बल्ब होता है और उनकी सुगंध भी अच्छी होती है। वे मोमबत्तियां बाजार में मिलती हैं। जब मैंने उन मोमबत्तियों को पहली बार देखा तो वह तौलिये के पास पड़ी हुई थीं। मैंने कहा, ''यह तो अच्छी बात नहीं है। तौलिया में आग पकड़ लेगी।'' तो मैंने मोमबत्तियों को तौलिये से थोड़ा अलग कर दिया। जब मैं उनके नजदीक गया तो महसूस किया कि उन मोमबत्तियों में न आग है, न गरमी। एक मोमबत्ती को उठाकर देखा तो सोचने लगा, ''अरे, यह तो बड़ी अच्छी मोमबत्ती है। बैटरी की मोमबत्ती है। इसमें मोमबत्ती के सारे गुण हैं। यह प्रकाश भी देती है। इससे किसी चीज को आग भी नहीं लगेगी। इसकी खुशबू भी अच्छी है।'' मैं इसके बारे में सोचता रहा, सोचता रहा कि कुछ न कुछ तो इस मोमबत्ती में कमी जरूर होगी, गड़बड़ी जरूर होगी। इसमें सबकुछ ठीक है, परंतु कोई न कोई कसर, कोई न कोई एक गड़बड़ जरूर होगी। तब रात को अचानक मुझे एक ख्याल आया कि ''यह मोमबत्ती दूसरी मोमबत्ती को जला नहीं सकती।'' नुक्स पकड़ में आ गया। कमी पकड़ में आ गयी। यह प्रकाश दे सकती है, परंतु जो बुझा हुआ दीपक है, उसको जला नहीं सकती। उसको जलाने के लिए जलता हुआ दीया चाहिए, जलती हुई मोमबत्ती चाहिए। ठीक उसी प्रकार गुरु महाराज जी भी आपके हाथ में ज्ञान का दीया रखते हैं, दीया जलाते हैं, ताकि आपको इस जीवन में ठोकरें नहीं खानी पड़ें।

फिर प्रश्न उठता है कि ''ठोकरें खाने का मतलब है कि रास्ते में पत्थर पड़े हुए हैं या ऐसी चीजें पड़ी हुई हैं, जिससे ठोकरें लगें? हमारी जिंदगी में ऐसा क्या है, जिससे ठोकरें लगें?''

आपको उठाने वाला कौन होगा?

आप इस बात को अच्छी तरह से समझ लीजिए कि आपकी जिंदगी में कोई ऐसी चीज नहीं है, जो आपको ठोकर मारने के लिए तैयार न हो। जिनके नन्हें-नन्हें बच्चे हैं, आप उनके साथ खेलते हैं। वे बोलते हैं, ''पापा, पापा'' और आप बड़े खुश होते हैं। उनमें क्षमता है, आपको ऐसी ठोकर मारने की, ऐसा गिराने की, कि आपको भी छठी का दूध याद आ जाए। कई लोग शादी करते हैं तो बड़े खुश होते हैं। नई-नई शादी हुई — अखबारों में पढ़ने में आता है कि लड़की को जला दिया। समाज, जिसकी आप इतनी परवाह करते हैं, वह आपको ठोकर मारने के लिए आएगा। वह आपको लात मारने के लिए आएगा। आपका परिवार आपको लात मारने के लिए आ सकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आएगा, परंतु आ सकता है, उसमें क्षमता है। नहीं आए तो ठीक है, पर आपको ठोकरें मारने के लिए, लात मारने के लिए उनमें क्षमता है। कोई ऐसी चीज नहीं है, जिनमें आपको ठोकरें मारने की क्षमता न हो। परंतु एक चीज है कि अगर आप गिर जाएंगे — यह नहीं कह रहा हूं कि आपमें गिरने की क्षमता है। आप गिरेंगे जरूर! मेरी यह बात आपको पसंद नहीं आएगी, परंतु आप गिरेंगे जरूर! बात यह है कि उस समय आपको उठाने वाला कौन होगा? बात है — प्रबंध करने की। जहां आप जा रहे हैं, वहां पानी न मिले, कोई बात नहीं। पानी साथ ले जाएंगे। जहां जा रहे हैं, वहां खाना न मिले, कोई बात नहीं। भजन है कि —

यह जीवन सच्चा है।
यह जीवन असली
है। इसको समझें। गुरु
महाराज जी जो देते
हैं, उसको समझें
और अपने जीवन को
सफल बनाएं। यह
सबसे बड़ी बात है।
क्योंकि यह संभव है।

भूले मन समझ के लाद लदनियां।

जो करना है, अभी कर लीजिए, परंतु प्रबंध जरूर कर लीजिए कि जब आप गिरेंगे तो आपको उठाने वाला कौन होगा? इसे कहते हैं — प्लानिंग! प्लानिंग कर लीजिए।

पानी के जहाज में एक जैकेट होती है। उसको कहते हैं — लाइफ जैकेट। लोगों को वह पहना देते हैं, ताकि अगर कोई पानी में गिरेगा तो डूबेगा नहीं। क्योंकि अगर पानी के जहाज में हैं तो अच्छा से अच्छा आदमी भी हो, अगर उसका पैर फिसल जाए तो वह गिर जाएगा। अगर कोई कहे कि ''मुझे तैरना आता है।'' ठीक है, अच्छी बात है कि आपको तैरना आता है, पर आप कितने दिन तैरेंगे? यही तो चक्कर है कि समुद्र में कितने दिन तैरेंगे? एक दिन, सारे दिन। कितने मील तैरकर जाएंगे? पर अगर प्रबंध कर लिया कि अगर गिर गये तो कम से कम जैकेट रहेगी तो डूबेंगे नहीं। उसका रंग भी ऐसा होता है कि दूर से दिखाई देता है। क्योंकि अगर कोई खोजने के लिए आएगा तो उसको दूर से ही दिखाई दे जाएगा कि आप कहां हैं। कई जैकेटों में तो छोटी-छोटी लाइटें और ट्रांसमीटर भी होते हैं, ताकि पता लग जाये कि आप कहां हैं। आप गिरेंगे तो जरूर, पर इस संसार के अंदर आपने अपने लिए क्या प्रबंध किया हुआ है कि जब आप गिरेंगे तो आपको उठाने वाला कोई हो? वह कौन है? एक है, जब आप गिरेंगे तो आपको उठा सकता है। उससे नाता बनाने की जरूरत है। वह हैं — गुरु महाराज जी। गुरु महाराज जी जो चीज देते हैं, उसको आप सीखें, उसको आप समझें। जब आप समझेंगे, सीखेंगे, तब शिष्य का नाता बनेगा। संत पलटूदास जी ने कहा है कि —

शिष्य शिष्य सब कोई कहे, शिष्य भया न कोय।
पलटू गुरु की वस्तु को, सीखे तब शिष्य होय॥

मैं जिस ज्ञान की चर्चा करता हूं और देता हूं, आप इस ज्ञान के द्वारा अपना जीवन सफल कर सकते हैं। अगर आप इस ज्ञान को समझ जाएं तो आपकी दुनिया बदल जायेगी। आपका संकोच दूर हो जायेगा। क्योंकि जब बात समझ में आ जाती है, जब पहचान हो जाती है, तब उससे प्रीत हो जाती है। जब प्रीत हो जाती है, तब फिर नाता बन जाता है। जब नाता बन जाता है, तो मनुष्य कहीं भी हो, कहीं भी जाए, वह उस नाते से बंधा हुआ है।

गुरु महाराज जी के पीछे चलना!

गुरु महाराज जी जो चीज देते हैं, उसको आप सीखें, उसको आप समझें। जब आप समझेंगे, सीखेंगे, तब शिष्य का नाता बनेगा। क्योंकि जब बात समझ में आ जाती है, जब पहचान हो जाती है, तब प्रीत हो जाती है, तब फिर नाता बन जाता है।

एक बात और समझने की है कि गुरु महाराज जी के पीछे चलना चाहिए, उनसे आगे नहीं। क्योंकि आगे-आगे चलेंगे तो पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा कि ठीक रास्ते पर जा रहे हैं या नहीं। परंतु अगर पीछे चलेंगे तो चिंता नहीं करनी पड़ेगी। जहां वे जा रहे हैं, वहां हम भी जा रहे हैं। अगर आगे चलेंगे, पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा तो आपको ठोकर जरूर लगेगी। क्योंकि जहां देखना चाहिए, वहां तो देख नहीं रहे हैं? यह देख रहे हैं कि ठीक जगह जा रहे हैं?

आप जीवन के रास्ते पर चलें, परंतु भय से नहीं। आप डरते हैं। हर एक चीज से डरते हैं — ''कहीं भगवान रूठ गये तो क्या होगा?'' अगर कहीं भी छोटा मंदिर या बड़ा मंदिर दिखा, उन्हें प्रणाम करते हैं, वरना भगवान रूठ जायेंगे। क्यों? क्या भगवान को कुछ करने के लिए नहीं है? क्या आपसे रूठना ही उनको पसंद है? आपने उनको प्रणाम नहीं किया तो वे रूठ जायेंगे? भगवान तब भी था, जब मनुष्य नहीं था, मनुष्य जाति ही नहीं थी। उनको कोई प्रणाम करने वाला ही नहीं था। उनको भगवान कहने वाला भी कोई नहीं था। सबकुछ ठीक था। एक दिन मनुष्य जाति नहीं रहेगी, कुछ नहीं रहेगा — न धरती रहेगी, न सूरज रहेगा, न चंद्रमा रहेगा। यह तो वैज्ञानिकों ने भी कहा है। धीरे-धीरे कुछ नहीं रहेगा। आपको यह मालूम है या नहीं, परंतु धीरे-धीरे चंद्रमा धरती से दूर होता जा रहा है और धीरे-धीरे बड़ा हो रहा है। एक दिन न सूरज रहेगा, न चंद्रमा रहेगा, न धरती रहेगी, न मनुष्य रहेगा और न आपकी कोई समस्या रहेगी। कुछ नहीं रहेगा। इसीलिए गुरु महाराज जी के पीछे चलना चाहिए। उनसे आगे नहीं। क्योंकि आगे-आगे चलेंगे तो

अपनी जिज्ञासा रूपी प्यास को बुझने मत देना। क्योंकि अगर जिज्ञासा बुझ जायेगी तो फिर गड़बड़ होगी। दीये में समझ रूपी तेल डालते रहो और गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, इसकी आग इसमें जलने दो, ताकि आपके जीवन में प्रकाश हो जाये।

पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा कि ठीक रास्ते पर जा रहे हैं या नहीं। परंतु अगर पीछे चलेंगे तो चिंता नहीं करनी पड़ेगी। जहां वे जा रहे हैं, वहां हम भी जा रहे हैं। अगर आगे चलेंगे, पीछे मुड़कर देखना पड़ेगा तो आपको ठोकर जरूर लगेगी। दूसरी कोई बात नहीं है। बात है आनंद की, कि जीवन में आनंद हो।

लोग गंगा जी में नहाने के लिए जाते हैं। क्योंकि मान्यता है कि गंगा में नहाने से सारे पाप धुल जायेंगे। अगर कोई किसी का खून करके, गंगा में जाकर कई बार स्नान कर ले और जज जब पूछे कि ''तुमने कत्ल क्यों किया'' और वह व्यक्ति कहे कि ''अजी, मैंने कत्ल तो जरूर किया, परंतु मैं गंगा जी में एक हजार बार स्नान करके आ रहा हूं। हमारे सारे पाप धुल गए हैं। अब सबकुछ सामान्य हो गया है'' तो क्या जज छोड़ देगा? वह ऐसा पिटवायेगा कि पूछो मत! जज क्या, बल्कि पुलिस ऑफिसर इतना पीटेगा कि पूछो मत।

गुरु महाराज जी का ट्रिक!

अगर अपने पाप धोने हैं तो आपके अंदर भी एक गंगा है। इस असली गंगा में आपके संशय रूपी पाप धुलते हैं। जब संशय धुल जायेंगे तो आप सचमुच पवित्र हो जायेंगे। यही पवित्रता की परिभाषा है कि जब मनुष्य की संशय रूपी सारी धूल, सारे दाग धुल जाते हैं तो वह पवित्र हो जाता है। गुरु महाराज जी के पास ऐसी विधि है, गुरु महाराज जी ऐसे जादूगर होते हैं, उनके पास ऐसी विधि है, हमारे पास ऐसी विधि है कि डिब्बे को बिना खोले हम मनुष्य को बाहर निकाल लेंगे। अच्छी ट्रिक है। डिब्बे को भी नहीं खोलना पड़ा और मनुष्य को भी बाहर निकाल ले। डिब्बा वैसा का वैसा ही रहेगा। डिब्बे को भी नहीं छेड़ सकते हैं, क्योंकि यह डिब्बा हमारा बनाया हुआ नहीं है। यह डिब्बा संसार का बनाया हुआ है। इसको जब छेड़ेंगे तो लोग कहेंगे कि ''आप क्या कर रहे हैं?'' इसलिए यह समस्या तो जरूर है कि डिब्बे को भी नहीं छेड़ना है और मनुष्य रूपी चींटी, जो इस डिब्बे में बंद है, उसको भी निकालना है। गुरु महाराज जी के पास इसकी विधि है। इस डिब्बे के ऊपर रस्सी बांधने वाले, उस पर दस गाँठ लगाने वाले बहुत हैं, परंतु इसमें से निकालने वाला, बिना डिब्बे को छुए निकालने वाला कोई नहीं है। क्योंकि लोगों को नहीं मालूम कि मनुष्य रूपी चींटी जो डिब्बे में बंद है, उसको बिना डिब्बे को छेड़े कैसे निकाला जाय। परंतु गुरु महाराज जी को मालूम है कि इस डिब्बे में एक जगह है, जहां छेद है। वह बहुत बड़ा छेद नहीं है, पर इतना बड़ा जरूर है कि आप इसमें से निकल सकते हैं। इस दुनिया ने सबको बांधा हुआ है, परंतु एक हृदय रूपी जगह है, जहां छेद है, वहां से आप निकल सकते हैं। वहां यह दुनिया नहीं जा सकती। आपका जो हृदय है, वहां दुनिया नहीं जा सकती। यह है ट्रिक। इसीलिए गुरु महाराज जी हृदय की बात करते हैं। क्योंकि हृदय में प्यास लगती है। हृदय में है वह चाबी, वहीं है वह खुशी।

विश्वास करें, सोचें और समझें। गुरु महाराज जी जो रास्ता बताएं, उस पर अमल करें। गुरु महाराज जी यही करने में लगे हुए हैं। कई मनुष्य रूपी चींटियां हैं, जो बाहर निकलकर आती हैं तो कहती हैं, ''वाह-वाह, वाह-वाह'', फिर अंदर घुस जाती हैं। फिर गुरु महाराज जी याद दिलाते हैं कि ''तुम्हें बाहर क्यों निकाला था?'' बाहर तो आई हुई थी, फिर अंदर जाकर वे ही चींटियां कहती हैं, ''मैं तो फिर वापस अंदर आ गई।'' यह तो आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप बाहर रहना चाहते हैं या डिब्बे के अंदर ही रहना चाहते हैं। अगर आपको डिब्बे में ही बंद रहना है तो रहें। पर सहयोग के लिए हमको मत बुलाइए। क्योंकि हम तो उस चींटी को कहेंगे, ''बाहर निकल!'' क्योंकि आपको गुरु महाराज जी उस डिब्बे के अंदर नहीं मिलेंगे। यही सब करना चाहते हैं कि डिब्बे को बांध दो। कौन हैं आप? आप किसी के बेटे हैं, किसी के पिता हैं, किसी की पत्नी हैं, किसी के पति हैं, आप यह हैं, आप वह हैं। सारे डिब्बे बंधे हुए हैं और आप इन डिब्बों में बंधे हुए हैं। सारी जिंदगी भर, जो आपको दुनिया ने कहा, आपने वही किया।

असली चीज क्या है?

किसी ने आपको भगवान की फोटो दिखाकर कहा, ''ये भगवान हैं।'' आपने विश्वास कर लिया। यह आपने नहीं सोचा कि किसने भगवान की फोटो ली? कौन कैमरा वाला था, जो भगवान के पास बैकुंठ में गया था और कहा था कि ''भगवान जी! आप जरा मुस्कराइए'' और क्लिक करके फोटो लिया? कौन ऐसा कैमरा वाला अपना ''कैनन कैमरा'' लेकर बैकुंठ गया था और कहा था कि ''शेष नाग जी! ज़रा थोड़ा-सा इधर और लक्ष्मी जी! आप ज़रा उधर ... हां, ज़रा मुस्कराइये'' — क्लिक करके फोटो लिया हो? कोई नहीं गया। किसी चित्रकार

इस संसार के अंदर सुख-दुख सबके लिए है। मनुष्य को दुख इसलिए है, क्योंकि उसका ध्यान सुख की खान से हट जाता है। जब मनुष्य का ध्यान सुख के भण्डार से हटेगा तो उसको क्या मिलेगा? सिर्फ दुख ही तो मिलेगा!

इस दुनिया ने सबको बांधा हुआ है, परंतु एक हृदय रूपी जगह है, जहां यह दुनिया नहीं जा सकती। इसलिये गुरु महाराजी हृदय की बात करते हैं, क्योंकि हृदय में प्यास लगती है। हृदय में वह चाबी है, वहीं है वह खुशी। विश्वास करें, सोचें और समझें।

ने अपनी कल्पना से चित्र बनाया। अपने मन से उसने चित्र बनाया और दुनिया कहती है, ''इसे पूजो!'' असली भगवान के बारे में क्या करते हैं? मतलब, अगर आदमी को अपनी पत्नी की फोटो से इतना प्रेम हो जाये कि वह पत्नी को छोड़ दे तो घर-गृहस्थी कैसे चलेगी? वह अपनी पत्नी की फोटो को लिए हुए चूम रहा है और लोगों से कह रहा है, ''यह मेरी बीवी है, यह मेरी बीवी है'' और जब असली बीवी आए तो कहे, ''यहां से निकल, यह मेरी बीवी है'', तो वह गया काम से। अपने बच्चे के फोटो से इतना प्रेम हो जाये कि बच्चे को ही छोड़ दिया और फोटो को ही कहे कि ''यह मेरा बेटा है, यह मेरा बेटा है'', ऐसे कैसे काम चलेगा? इसलिए, आप बाहर जो कुछ भी करते हैं, करें, परंतु असली चीज को भी समझें कि असली चीज क्या है, जो आपके अंदर है। अंदर की बात है।

जो समझी जा सकती है, उस बात को समझें। अगर कोई चीज समझ में आ सकती है, वह यह है कि आप अपना जीवन कैसे सफल कर सकते हैं। समझना तो पड़ेगा ही। जीवन मिला हुआ है। अब इसके साथ क्या करेंगे? यह तो मिला हुआ है, स्वांस तो चल रहा है। आपको कहां जाना है, क्या मालूम है? अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति के पास पहुंच गये, जिसको सब रास्ते तो मालूम हैं, परंतु उसको ये नहीं मालूम कि ''कहां जाना है'', तो आप उससे क्या पूछेंगे? आपके पास सारे हिन्दुस्तान का नक्शा हो, पर आपको यह नहीं मालूम कि ''आपको कहां जाना है'', तो आप नक्शे के साथ क्या करेंगे? आप अपनी मंजिल भूल गये। तब आपको कोई याद दिलाने के लिए आता है। वह आपको याद दिलाता है कि ''कहां जाना है और पहुंचना कब है।'' मरने के बाद नहीं पहुंचना है, बल्कि मरने से पहले पहुंचना है। आप निर्णय लीजिए कि आप मरने के बाद पहुंचना चाहते हैं या मरने से पहले? स्वर्ग जाने में यही तो दिक्कत है! स्वर्ग जाने में क्या दिक्कत है? क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग जाने में क्या दिक्कत है? दिक्कत है कि स्वर्ग जाने के लिए मरना पड़ता है। मरना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। मतलब, वह तो वन-वे टिकट है। अर्थात् अगर आप उस दरवाजे से निकलेंगे तो फिर वापस नहीं आ सकेंगे। आप गये तो गये! अगर आप गलत जगह पहुंच गये तो कम्प्लेन किसको करेंगे? यह तो वैसी ही बात है कि आपकी तेरहवीं पर खाना बनेगा, आपकी याद में बनेगा और खूब बनेगा, परंतु आप नहीं खा पाएंगे। यही तो चक्कर रहता है! इसलिए आप सोच लें कि क्या आपको मरने के बाद पहुंचना है या मरने से पहले? मरने के बाद अगर आप स्वर्ग जाना चाहते हैं तो जाइए। मेरे पास तो जीते-जी स्वर्ग की बात होती है कि मरने से पहले पहुंचना है। वरना मरने के बाद पहुंचने की बात समझाने वाले तो इस संसार में बहुत हैं। वे समझाते हैं कि ''यह करो, वह करो, तब तुम स्वर्ग जाओगे।'' वहां क्या खाएंगे? लड्डू खाएंगे। अगर आपको लड्डू पसंद नहीं हों तो क्या करेंगे? अन्य कोई दूसरी चीज वहां खाने के लिए नहीं है। वहां लड्डू ही लड्डू हैं और आपको लड्डू पसंद नहीं हैं तो आप तो नरक में ही गये।

यह सारा खेल है। खेल मत खेलो। यह जीवन सच्चा है। यह जीवन असली है। इसको समझें। गुरु महाराज जी जो देते हैं, उसको समझें और अपने जीवन को सफल बनाएं। यह सबसे बड़ी बात है। क्योंकि यह संभव है। जिनको ज्ञान मिला हुआ है, वे लोग ज्ञान का अभ्यास करें। जिनको ज्ञान नहीं मिला हुआ है, जो जिज्ञासु हैं, वे इस जिज्ञासा रूपी प्यास को लिए हुए आगे बढ़ें, उनको ज्ञान मिलेगा। अब तो इतना सरल हो गया है कि जगह-जगह ज्ञान फैल रहा है। ऐसी-ऐसी जगह ज्ञान का प्रचार हो रहा है कि हम तो सोच भी नहीं सकते थे। रेगिस्तान के बीच में भी लोगों को ज्ञान हुआ है। ऐसे-ऐसे देशों में प्रचार हुआ है कि हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि वहां ज्ञान होगा। तो बहुत सरल हो गया है। अपनी जिज्ञासा रूपी प्यास को बुझने मत देना। जब आपको ज्ञान भी हो जाये, फिर भी जिज्ञासा की आग को मत बुझने देना। क्योंकि अगर जिज्ञासा बुझ जायेगी तो फिर गड़बड़ होगी। दीये में समझ रूपी तेल डालते रहो और गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, इसकी आग इसमें जलने दो, ताकि आपके जीवन में प्रकाश हो जाये। लम्बी-चौड़ी बात नहीं है। सरल बात है और यह संभव है। हम आपको कोई कथा नहीं सुना रहे हैं। यह कथा ही कुछ दूसरी है। यह आपकी कथा है। यह कथा हजार साल पहले की नहीं है, बल्कि यह कथा आपकी है, हमारी है और आज की है, अब की है। इस समय की यह कथा है। इस कथा को सुनो। इस कथा में अनेक बातें हैं। इसकी हर एक कहानी आपकी कहानी है। इस कथा में जो बाद में होगा, जो अंत में होगा, अगर आपने इस कथा को सुना तो अच्छा ही होगा, बढ़िया ही होगा। इसमें ट्रेजिडी नहीं है। यह बहुत खुशखबरी की कहानी है। बहुत ही सुखद अंत होता है। तो समझें, सुनें और अपना जीवन सफल करें। ❖

आपके अंदर भी एक गंगा है। इस असली गंगा में आपके संशय रूपी पाप धुलते हैं। जब संशय धुल जायेंगे तो आप सचमुच पवित्र हो जायेंगे। यही पवित्रता की परिभाषा है कि जब मनुष्य की संशय रूपी सारी धूल, सारे दाग धुल जाते हैं तो वह पवित्र हो जाता है।

तीन बातें!

आप कहीं भी हों, किसी भी संकट में हों, हमारी बात याद रखें। इस जीवन के अंदर अगर सफलता प्राप्त करनी है तो तीन बातों को समझना बहुत जरूरी है। जब अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण समझाते हुए कह रहे हैं कि ''हे अर्जुन! तुम छल-कपट को त्यागकर, बालक का हृदय लेकर, समय के महापुरुष के पास जाकर ज्ञान मांगो। जब वे प्रसन्न होंगे तो वे तुम्हें ज्ञान दे देंगे।'' इसमें तीन बातें हैं। पहली बात — छल-कपट को छोड़ो! दूसरी बात — बालक का हृदय लेकर। तीसरी बात — समय का

महापुरुष। जीवन में इन तीन बातों को समझना बहुत जरूरी है। मैं ये तीन बातें आपके आगे रखना चाहता था, क्योंकि ये अभी भी लागू हैं। जबतक आप जिन्दा हैं, ये लागू रहेंगी।

तीन बातों को समझना बहुत जरूरी है। जब अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण समझाते हुए कह रहे हैं कि ''हे अर्जुन! तुम छल-कपट को त्यागकर, बालक का हृदय लेकर, समय के महापुरुष के पास जाकर ज्ञान मांगो। जब वे प्रसन्न होंगे तो वे तुम्हें ज्ञान दे देंगे।'' इसमें तीन बातें हैं। पहली बात — छल-कपट को छोड़ो! दूसरी बात — बालक का हृदय लेकर। तीसरी बात — समय का महापुरुष।

लोग तो यही समझते हैं कि अगर किसी भी ग्रंथ में, किसी भी शास्त्र में, किसी वेद में कहीं कुछ ऐसा लिखा हुआ है कि ''यह भगवान ने कहा है'' तो वह आसान तो हो नहीं सकता। इसलिए कि भगवान ने कहा है। कई बार तो लोगों को ऐसा लगता है कि भगवान ने हम सबको परेशान करने के लिए ऐसा कहा है।

अपने साथ भी छल-कपट?

अगर हम सोचें, विचारें तो यही लगता है कि आज के मनुष्य के लिए छल-कपट को त्यागना आसान बात नहीं है। छल और कपट मनुष्य में ऐसा कूट-कूटकर भरा हुआ है, छल और कपट करने की मनुष्य की ऐसी आदत बनी हुई है कि कई बार तो मनुष्य को यह भी अहसास नहीं होता है कि मैं छल-कपट किसके साथ कर रहा हूं। वह स्वयं अपने साथ भी छल-कपट करने लगता है। लोग कहते हैं, ''सब ठीक है जी! सब ठीक है, सब ठीक है!''

परंतु सोचने की बात है कि मनुष्य अपने से ही छल करता है। कैसे छल करता है? वह कहता है कि ''सब ठीक है!'' जब कुछ ठीक नहीं है, फिर भी मनुष्य अपने को यह समझाने की कोशिश करता है कि ''सब ठीक है!'' यह तो मनुष्य की आदत है। अगर उसके हिसाब से सबकुछ हो, तब तो सबकुछ बढ़िया है। अगर उसके हिसाब से बढ़िया न हो, उसके अनुकूल न हो तो सब खराब है। इस कलियुग के अंदर छल और कपट त्यागने की जितनी मनुष्य को जरूरत है, उतनी मेरे ख्याल से किसी युग में नहीं हुई होगी। इसलिए छल-कपट को त्यागकर, ज्ञान प्राप्त करने के लिए समय के महापुरुष की खोज करें, वरना भटकना पड़ेगा। एक भजन में कहा है कि —

आतमज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी।
मृग नाभि में है कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी॥
मोहे सुन सुन आवे हाँसी॥

आत्मज्ञान क्या है? सेल्फ-नालेज! आत्मज्ञान के बिना आप भटकेंगे। चाहे भटककर क्यों न आप मथुरा जाएं, चाहे काशी जाएं, पर भटकेंगे। इसलिए छल-कपट को दूर करें, ताकि आप अपने जीवन में उस ज्ञान का पूरा-पूरा आनंद ले सकें।

बालक का हृदय

दूसरी बात — बालक का हृदय लेकर आओ! बड़े आदमी में और बालक में क्या अंतर है? क्या आप जानते हैं कि क्या अंतर है? बच्चे को घमंड नहीं है, लोग घमंडी हैं। मनुष्य घमंडी ही नहीं, महाघमंडी है! छोटी-छोटी बातों का मनुष्य को घमंड है। छोटी-से-छोटी बात का मनुष्य घमंड करता है। घमंड करने के कारण मनुष्य किसी की बात नहीं सुन सकता। घमंड मनुष्य को अंधा बना देता है, बहरा बना देता है और घमंड ऐसी-ऐसी

बातें उसके मुंह से निकाल देता है।, जिसे वह कहना नहीं चाहता है। घमंड की वजह से लोग सत्संग नहीं सुनते हैं। कहते हैं कि ''हमको मालूम है। हमने सारे वेद पढ़े हैं।'' ऐसे लोगों से तो मेरा बहुत पहले भी पाला पड़ा है, जो कहते थे कि ''हम सब जानते हैं।'' उस समय तो मेरी उम्र भी बहुत कम थी। उस समय मैंने कहा कि जब आप सब जानते हैं तो मेरे पास क्यों आए? बात यह है कि मैं आपके पास नहीं आया, आप मेरे पास आए हैं। क्या आपको मालूम है कि आपके अंदर स्वांस आया? नहीं। जब स्वांस गया तो क्या आपको मालूम पड़ा? नहीं। भगवान आपके अंदर स्थित है, क्या आपको मालूम है या सिर्फ पढ़े ही पढ़े हैं?'' लोगों ने पढ़ा जरूर है, पर मालूम नहीं है कि वह भगवान अंदर स्थित है।

मनुष्य ने अपने घमंड से भगवान को भी मनुष्य बना दिया। जिसको हाथ की जरूरत नहीं है, उसको हाथ दे दिए। जिसको आँखों की जरूरत नहीं है, उसको आँखें दे दी। जिसको मुंह की जरूरत नहीं है, उसको मुंह दे दिया। जिसको पैरों की जरूरत नहीं है, उसको पैर भी दे दिए। जो सारे संसार की रचना करता है, जिसको आराम करने की जरूरत नहीं है, जिसको काम करने की जरूरत नहीं है, जो सर्वव्यापी है, जो सब जगह है, उसको भी थका दिया। उसके लिए छुट्टी है — रविवार का दिन! लोग कहते हैं, ''भगवान आराम कर रहे हैं, भगवान विश्राम कर रहे हैं।'' जो कहीं जाता नहीं, कहीं से आता नहीं। सोचिए। कहां जायेंगे भगवान? वहीं तो जायेंगे, जहां वे नहीं हों? वह कौन-सी जगह है, जहाँ वे नहीं हैं? इसलिए वे आयेंगे कहां से और जायेंगे कहां? न उनको कहीं से आने की जरूरत है और न उनको कहीं जाने की जरूरत है। उनको भी क्या बना दिया? मनुष्य जैसा बना दिया। जिसने मनुष्य को बनाया, मनुष्य ने अपना रूप उसे ही दे दिया। किसी आर्टिस्ट ने कल्पना की और सबने स्वीकार कर लिया। इसीलिए तो कबीरदास जी ने कहा है कि अगर पत्थर पूजने से भगवान मिल जाएं तो मैं तो पहाड़ को ही पूजने लगूं। छोटी-मोटी को क्या, पूरे के पूरे पहाड़ को क्यों न पूंजूं? पर पहाड़ के पूजने से, पत्थर को पूजने से भगवान नहीं मिलता। घमंड के कारण लोग कहते हैं कि ''तुमने मेरे भगवान के बारे में उल्टा-सीधा क्यों कह दिया?'' आज दुनिया एक-दूसरे को मारने के लिए खड़ी हुई है। जिसके बारे में कबीरदास जी ने कहा है कि —

बड़े आदमी में और बालक में क्या अंतर है? बच्चे को घमंड नहीं है और आदमी घमंडी है। छोटी-छोटी बातों का मनुष्य को घमंड है। घमंड मनुष्य को अंधा बना देता है, बहरा बना देता है और घमंड ऐसी-ऐसी बातें उसके मुंह से निकाल देता है, जिसे वह कहना नहीं चाहता है।

अलख इलाही एक है, नाम धराया दोय।
कहे कबीर दो नाम सुनी, भरम करो मत कोय॥

पहले ही सबको चेतावनी दे दी। बालक हृदय से आगे बढ़ता है, दिमाग से नहीं। इसलिए कहा कि ''बालक का हृदय लेकर .... ।''

समय का महापुरुष

अब आइये, तीसरी बात पर — समय का महापुरुष! यह है सबसे कठिन बात कि ''छल-कपट को त्यागकर, बालक का हृदय लेकर, समय के महापुरुष के पास जाओ।''

कैसा होता है समय का महापुरुष? क्या आपको समय के महापुरुष की पहचान है? क्या पहले कभी बाजार में महापुरुष से आप मिले हैं, ताकि जब वे कहीं दुबारा मिल जाएं तो पहचान लेंगे कि ''हां, यही हैं?'' नहीं। कुछ लोग तो कहते हैं कि ''महापुरुष को बुड्ढा होना चाहिए। उनके सारे बाल सफेद होने चाहिए।'' कुछ लोग कहते हैं, ''नहीं, जवान होना चाहिए।'' कोई कहता है कि ''आजकल समय के महापुरुष कहां रहे?'' अगर आप समय के महापुरुष के सामने में भी खड़े हो जाएंगे तो क्या समय के महापुरुष को जान जाएंगे? अगर पहचान भी लेंगे तो क्या जान जाएंगे? क्योंकि समय के महापुरुष की एक ही कसौटी है। न बड़े-बड़े बाल, न कोई वेषभूषा, न शरीर! उसकी एक ही कसौटी है कि वह जो देता है, अपना प्रेम देता है। वह है उस महापुरुष की कसौटी। वह आपको चेतावनी देता है और समय से चेतावनी देता है। बाद में नहीं कि ''ऐसा करना, वैसा करना, वहां मत बैठ!'' अगर गिर गए, उसके बाद कोई चेतावनी दे कि ''गिरना मत'', तो यह कैसी चेतावनी हुई?'' यह चेतावनी थोड़े ही है कि अंधा कुएं में गिर रहा है और कोई उसे कहे कि ''भाई! बचकर चलना।'' चेतावनी ऐसी होती है, जिससे आदमी अपनी सुरक्षा कर सके। उस समय चेतावनी नहीं कि जब गड़बड़ हो रही है। पहले से ही जो चेतावनी दे। उस महापुरुष की सबसे बड़ी कसौटी है, जब वह ज्ञान देता है।

लोग कहेंगे कि ''जी, कैसे पता लगेगा कि समय का महापुरुष है? जब ज्ञान मिलेगा तभी तो पता लगेगा?'' जहाँ खाना बन रहा है, भूखे को वहीं से खुशबू आनी शुरू हो जाती है। अभी खाना नहीं खाया, परंतु पहले से ही खुशबू चालू हो जाती है। जो महापुरुष का संदेश है, वह एक हृदय से दूसरे हृदय के लिए आता है। अगर आप उसको ध्यान से सुनेंगे, समझेंगे तो आपको अपने आप पता लगेगा कि समय का महापुरुष कौन है! जब मिलेंगे, तब पहचान होगी। कब जानेंगे? जब ज्ञान मिलेगा। तब फिर कोई संशय नहीं रहेगा।

महापुरुष की एक पहचान और है कि वह मुश्किल से मुश्किल चीज को भी आसान कर देता है। सचमुच में अगर आप इस बात पर विचार करें, इसे समझें कि इस जीवन का सफल होना कितना मुश्किल, नामुमकिन काम होता है, परंतु महापुरुष अपना ज्ञान देकर, अपने सत्संग के द्वारा नामुमकिन और मुश्किल काम को भी आसान कर देते हैं। लोगों के जीवन को सफल कर देते हैं। मैंने अपने जीवन में देखा है — जो समय के महापुरुष के सानिध्य में रहे, जिन्होंने सत्संग सुना, ज्ञान का अभ्यास किया, वे इस दुनिया से खाली हाथ नहीं गये। उनका हृदय भी भरा और कृतज्ञता से आँखें भी भरीं, क्योंकि वे धन्य हो गये। उनके जीवन के अंदर आनंद की ऐसी लहर आई कि फिर उनके जीवन में कभी सूखा नहीं पड़ा। गुरु महाराज जी अपने प्रेम के द्वारा जब बारिश करते हैं तो जीवन के रेगिस्तान में एक दिन की बारिश नहीं, दो दिन की बारिश नहीं, बल्कि ऐसी बारिश होती है, ऐसी बारिश होती है कि वहां कभी अकाल नहीं आयेगा।

इस जीवन की अंधेरी रात में उजाला करने के लिए हजारों बल्बों की जरूरत नहीं है, सिर्फ एक ज्ञान रूपी दीये की जरूरत है। अपने हृदय में इस ज्ञान रूपी दीये को जलाएंगे तो चाहे कितना भी अंधेरा होगा, वह आपके पास नहीं आ पाएगा। उस दीये को जलाएं, ताकि आपके जीवन में भी प्रकाश हो।

एक दीये की जरूरत है!

आप कहीं भी हों, किसी भी संकट में हों, हमारी बात याद रखें। इस जीवन के अंदर अगर सफलता प्राप्त करनी है तो उसके लिए बहुत लम्बा-चौड़ा कुछ नहीं चाहिए। तराजू में सिर्फ थोड़ा-सा वजन एक तरफ ज्यादा हो। बस! थोड़ा-सा! दस किलो नहीं, चालीस किलो नहीं, हजार किलो नहीं। थोड़ा-सा! हो सकता है आपके जीवन के तराजू का पलड़ा ऊपर-नीचे होता रहे, पर अगर सच्चाई की तरफ थोड़ा-सा वजन और हो जाये तो फिर ऊपर-नीचे नहीं होगा। बस, एक तरफ का पलड़ा, दूसरे पलड़े से थोड़ा-सा भारी होना चाहिए। इसके बाद आपको इस जिंदगी के अंदर जो करना है — इस संसार के अंदर जो कुछ भी आपकी

जो महापुरुष का संदेश है, वह एक हृदय से दूसरे हृदय के लिए आता है। अगर आप उसको ध्यान से सुनेंगे, समझेंगे तो आपको अपने आप पता लगेगा कि समय का महापुरुष कौन है! जब मिलेंगे, तब पहचान होगी। कब जानेंगे? जब ज्ञान मिलेगा। तब फिर कोई संशय नहीं रहेगा।

जिम्मेवारियां हैं, उनको पूरा करें, परंतु थोड़ा-सा ध्यान हृदय की तरफ भी जाना चाहिए। एक बार पलड़ा भारी हो गया तो बस!

इस जीवन की अंधेरी रात में उजाला करने के लिए हजारों बल्बों की जरूरत नहीं है, दस हजार बल्बों की जरूरत नहीं है। सिर्फ एक दीये की जरूरत है। अगर वह दीया जलता रहेगा तो अंधेरा नजदीक नहीं आ पायेगा। चाहे कितना भी बड़ा अंधेरा हो, चाहे हजारों-करोड़ों मील तक फैला हुआ हो, पर जहां दीया जल रहा है, वहां नहीं आ पाएगा। इसीलिए गुरु महाराज जी कहते हैं कि अपने हृदय में इस ज्ञान रूपी दीये को जलाओ, चाहे कितना भी अंधेरा हो, आपके पास नहीं आ पाएगा। उस दीये को जलाएं, ताकि आपके जीवन में भी प्रकाश हो। लम्बी-चौड़ी बात नहीं है।

मैं ये तीन बातें आपके आगे रखना चाहता था, क्योंकि ये अभी भी लागू हैं। जबतक आप जिन्दा हैं, ये लागू रहेंगी। छल-कपट है — कूड़ा! कूड़ा घर से एक बार नहीं निकाला जाता, बल्कि बार-बार निकालना पड़ता है। जब भी आ जाए, तब निकालना पड़ता है। छल भी ऐसा ही है, कपट भी ऐसा ही है। बालक का हृदय लेकर चलेंगे तो आप बहुत-कुछ सीखेंगे। अगर घमंडी बनकर चलेंगे तो आपके हाथ कुछ नहीं आएगा। आपको जो समझ मिली है, इस समझ को इस्तेमाल करें, ताकि आपका जीवन सफल हो सके, वरना हमलोग इस संसार के अंदर आते हैं, वही करते हैं, जो हजारों-करोड़ों लोग हमसे पहले करके गये हैं और हमसे बाद में भी करोड़ों-करोड़ों लोग करते रहेंगे।

कोई अपना नाम कमाने में लगा हुआ है। जहांतक नाम की बात है, कुछ साल चलेगा, फिर सब भूल-भाल जायेंगे। इस संसार के अंदर यही होता है। आप अगर कमाई करना चाहते हैं तो सतनाम की कमाई करें। अपने नाम की नहीं, सतनाम की कमाई करें। क्या है सतनाम? आपके हर स्वांस में बसा है वह सतनाम! उसका अभ्यास करेंगे तो साक्षात् आपके अंदर स्थित जो भगवान है, उसकी आप पूजा करते हैं, उसको महसूस करते हैं। जब महसूस करते हैं तो कोई न कोई तो खुश जरूर होता है। क्योंकि इस हृदय में बिना मांगे खुशी आ जाती है। मांगने की भी जरूरत नहीं होती है। इसे कहते हैं भगवान! उस भगवान के पास गए और जिसकी हमको खबर ही नहीं है कि क्या चाहिए, जो हमको चाहिए, वह हमें दे दे। जिस आनंद की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, वह मिल जाता है। सचमुच में आनंद लुटाया जा रहा है। इस आनंद को समेटकर रख लीजिए। इसलिए अगर कुछ कमाना है तो सतनाम की कमाई करें।

इस संसार के अंदर कितने ही लोग हैं, जो इस संदेश को सुनना चाहते हैं, जानना चाहते हैं, अपने जीवन

को सफल करना चाहते हैं। मैं याद दिलाता रहता हूं, ताकि सचमुच में आपका जीवन एक दिन ही सफल न हो, बल्कि पूरा का पूरा जीवन सफल हो। मैं बचपन से ही लोगों को यह समझाता आ रहा हूं कि यह जीवन सफल करना मुश्किल बात नहीं है।

ज्ञान को मत छोड़ना!

अब लोग आते हैं। किसी को कुछ है, किसी को कुछ है। तो वे गुरु महाराज जी के पास आते हैं और कहते हैं कि ''अजी, हमारा तो यह हो गया, वह हो गया'' और गुरु महाराज जी हँसते हैं। लोगों को लगता है कि हमारा तो यहां सबकुछ बेकार हो रहा है, खराब हो रहा है और उनको हँसी आ रही है। इसलिए हँसी आ रही है, क्योंकि गुरु महाराज जी को मालूम है कि अगर आपके पास अब संकट का समय आया है तो जो दूसरा समय आने वाला है, वह बहुत बढ़िया है। पर अगर सबकुछ बढ़िया चल रहा है, तब गुरु महाराज जी गंभीर होते हैं। इसीलिए तो महापुरुष की बात समझ में नहीं आती है। जो रो-धोकर आ रहा है, उसके लिए हँसते हैं और जो 'हा-हा' करके आ रहा है, उसके लिए गंभीर होते हैं और कहते हैं, ''अरे, जरा संभलकर रहना। ज्ञान को मत छोड़ना।'' क्योंकि उन्हें मालूम है कि यह, जो रो रहा है, इसका तो अच्छा समय आने वाला है और जो हँस रहा है, इसका तो बुरा समय आने वाला है।

एक दिन मैं कहीं कार में बैठा हुआ जा रहा था तो एक बात सोचकर मुझे हँसी आने लगी। माया के संबंध में मैंने एक बात लिख डाली —

माया ऐसी भैंस है, जाको नहीं ठौर।
घास खावे एक घर, दूध देय कहीं और॥

जब स्टाक मार्केट गिरा तो बड़ों-बड़ों की माया रूपी भैंस उनके घर को छोड़कर कहीं दूसरी जगह चली गयी। सारे संसार के अंदर लोग चिंतित हैं कि ''बाप रे बाप! अब क्या होगा? जो पैसा बचाया था, वह गया। अब क्या होगा?'' सारा संसार लगा हुआ है। दो लोग हैं, जिनको इस बात से असर नहीं है। एक तो वे, जो इतने अमीर हैं, इतने अमीर हैं कि उनको मालूम ही नहीं कि उनके पास कितना पैसा है। तो जो निकल गया, वह भी उनको नहीं मालूम। दूसरे वे लोग, जो सबसे गरीब हैं। जिनके पास कुछ है ही नहीं, वे क्या खोएंगे? उनके लिए तो अगर स्टाक-मार्केट क्रैश भी हो जाए, उनका क्या जाएगा? उनको तो हर दिन, हर समय हाथ ही फैलाना है, ''दे दो, दे दो।''

भारत में तो लक्ष्मी की पूजा करते हैं और लक्ष्मी जी कहीं और बैठी हैं। उन्हें तो वहां रहना चाहिए, जहां उनके भक्त खूब जोर-शोर से उनकी पूजा करते हैं। परंतु वे वहां हैं, जहां के लोग उनको जानते भी नहीं हैं। वहां तो ऐसे लोग हैं, जिनको मालूम ही नहीं है कि उनके पास कितना पैसा है। वे सवेरे-सवेरे निकलते हैं और प्लानिंग करते हैं कि कौन-सी कम्पनी खरीदें? चीजें नहीं, घड़ियों की शॉपिंग के लिए नहीं निकलते हैं, वे घड़ी की कम्पनी को खरीदते हैं। मैं सच कह रहा हूं। कार पसंद आई तो कार तो खरीदेंगे बाद में, वे कार की कम्पनी को खरीदते हैं। हवाई जहाज — पूछिये मत! यहां तो जब बड़े-बड़े हवाई जहाज आते हैं, जम्बो जेट आते हैं तो लोग देखकर कहते हैं कि ''बाप रे! कितना बड़ा हवाई जहाज है!'' वहां वे पूरा का पूरा हवाई जहाज दस लोगों के लिए लेकर चलते हैं। वहां तो अंदर महल है, बाथ टब लगे हुए हैं, कुर्सियां लगी हुई हैं, बिस्तर लगे हुए हैं, पलंग लगे हुए हैं और नीचे हेलिकॉप्टर रखने की जगह है, कार रखने की जगह है। कहां जा रहे हैं? कहीं भी। जहां भी इच्छा हुई, ''अच्छा, इधर की तरफ चल दो।'' मतलब, कहीं नौकरी तो करनी नहीं है। ऐसा तो है नहीं कि किसी के घर में जाकर टेबल बनाना है या किसी के घर में जाकर खाना बनाना है। नहीं। कहां जा रहे हैं जी? ''इधर चल!'' वहां तो लक्ष्मी की पूजा नहीं करते हैं। पूजा तो छोड़िए, वहां तो कोई लक्ष्मी पर विश्वास भी नहीं करता है। तो पूजा यहां हो रही है और फल वहां के लोगों को मिल रहा है।

समझने की बात है!

इसलिए यह सब चक्कर है। इस चक्कर में आप मत पड़ना। अगर इसमें फंस जाएंगे तो आपका समय बरबाद होगा। फंसना मत। अपने जीवन में आनंद लें। हम आनंद की बात कर रहे हैं। यह थोड़े ही कह रहे हैं कि ''उल्टे पैर आप किसी तीर्थ-यात्रा पर जाएं। कल भोजन मत करना।'' हम तो किसी को व्रत करने के लिए भी नहीं कहते हैं। हम दुख-दर्द की बात नहीं कर रहे हैं। हम सुख की बात कर रहे हैं, हम आनंद की बात कर रहे हैं। यही हम कहना चाहते हैं कि अपने जीवन में इस चीज को अपनाएंगे तो आपका ही भला होगा। इस जीवन का पूरा-पूरा फायदा उठाएं, वरना वैसी ही बात होगी कि —

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥

यह तो आपको मालूम है। चक्की चलते हुए तो आपने बहुत देख लिया। उसमें आपने अपनी उंगली भी डाली, अपने को भी डाला और पिसकर बाहर आये। घुन के साथ भी आये, आटा बनकर भी आये। यह तो सबको मालूम है। पर हम क्या समझाना चाहते हैं? जैसाकि कबीरदास जी ने कहा है —

चक्की चक्की सब कहें, किल्ली कहे न कोय।
जो किल्ली के पास में, बाल न बांका होय॥

यह समझने की बात है, वरना इस संसार के अंदर उल्टा-सीधा होता ही रहता है। इतने सालों से मैं क्या कहते आ रहा हूं? यही कि यह सब जायेगा। इसकी आप परवाह क्यों करते हैं? एक दिन तो आपको भी जाना है, पर अगर बात समझ में आ गई तो आपको खाली हाथ जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ❖

जिस आनंद की हम कल्पना नहीं कर सकते, अगर वह आनंद मिल जाता है तो इसे कहते हैं भगवान का अनुभव होना। अपने हृदय में इस ज्ञान के द्वारा उस आनंद को समेटिए, रखिए। वही है सतनाम। उस सतनाम की कमाई कीजिए।

बोध कथा

शक

लोगों को शक है कि "क्या सचमुच में भगवान सबको देखता है?" शक है कि "मरने के बाद मेरा क्या होगा?" इसीलिए तो लोग लगे रहते हैं? कहीं मंदिर जा रहे हैं, कहीं कुछ कर रहे हैं, कहीं कुछ पाठ हो रहा है तो कहीं कुछ पूजा हो रही है। क्योंकि शक है, "हो सकता है, स्वर्ग न पहुंचें।"

एक बार बादशाह अकबर की बेगम उसके पास आयी। वह कहने लगी कि "आप मेरे भाई को तो कोई पदवी नहीं देते हैं। वह बड़ा कुशल लड़का है, चतुर और बुद्धिमान है। उसको तो आप कुछ करने के लिए नहीं देते हैं और यह जो बीरबल है, इसको मुंह लगाकर रखते हैं।"

अकबर ने कहा कि "देखो, ऐसी बात नहीं है। बीरबल बहुत ही बुद्धिमान और चतुर है।"

तो बेगम ने कहा कि "इसकी चतुराई देख लेंगे।"

अकबर ने पूछा, "इसके लिए क्या करना होगा?"

बेगम साहिबा बोलीं कि "देखिए जहाँपनाह! आप अपने शाही बाग में शाम को घूमने के लिए जाना और बीरबल को बुलाना। फिर बीरबल से कहना कि बेगम को बुलाकर लाओ और मैं आऊंगी नहीं। वह बुलाने के लिए आएगा और मैं नहीं आऊंगी तो आप उस पर गुस्सा होकर उसको निकाल देना। उसकी जगह मेरे भाई को रख लेना।"

अकबर ने कहा कि "सोच लो! वह काफी बुद्धिमान है।"

बेगम ने कहा, "मैं जब आऊंगी ही नहीं — मैं आपसे कह रही हूं कि आप ही मुझको बुलाना और मैं आपसे कह रही हूं कि मैं आऊंगी ही नहीं तो वह मेरा क्या कर लेगा? वह मेरा क्या बिगाड़ लेगा?"

अकबर बेगम की बात मान गया। योजना के मुताबिक बादशाह अकबर बाग में घूम रहा था। उसने बीरबल को बुलवाया और कहा कि जाकर बेगम साहिबा को भी बाग में घूमने के लिए बुला लाओ। साथ ही उसने उसको सारी बात भी बता दी कि "भाई! ऐसी-ऐसी बात है। तुम बुलाने जाओ, परंतु वे आएंगी नहीं।"

बीरबल ने कहा, "जहाँपनाह! आप चिंता मत कीजिए। वे जरूर आयेंगी।"

अकबर को भी लगा, यह तो अच्छी चुनौती की बात है। तो बीरबल गया। बीरबल महल के पास पहुंचा और उसने एक द्वारपाल को बुलाकर कहा, "इधर आओ! यह अशर्फी लो। जब मैं महल के अंदर पहुंच जाऊं और बेगम साहिबा से बात कर रहा होऊं तो तुम आकर मेरे कान में फुस-फुसाकर ये शब्द बोलना। मेरे कान में ऐसे बोलना कि ऐसा लगे कि तुम मुझे कोई गुप्त बात बता रहे हो, परंतु इतनी आवाज में बोलना कि बेगम साहिबा को जरूर सुनाई दे।"

द्वारपाल ने कहा, "जी! ठीक है।"

बीरबल महल के अंदर गया। वहां बेगम साहिबा खड़ी हुई थीं। बीरबल उनसे कहने लगा कि ''रानी साहिबा! महाराज बगीचे में टहल रहे हैं। बहुत सुहाना मौसम है, सुंदर समय है। मेरे ख्याल से महाराज की यह इच्छा है कि आप .....'' इतने में द्वारपाल आकर बीरबल के कान में फुस-फुस करने लगा। फुसफुसाते हुए कहता है, ''..... और है वह बहुत ही खूबसूरत!'' यही वाक्य बीरबल ने द्वारपाल को सिखाया था कि मेरे कान में आकर फुसफुस करते हुए कहना कि ''....और है वह बहुत ही खूबसूरत!''

जैसे ही बीरबल ने यह सुना, रानी ने भी सुना तो बीरबल आधी बात छोड़कर ही बोलता है, ''रानी साहिबा! कोई बात नहीं है। आप यहीं रहिए।'' इतना कहते हुए बीरबल वहां से चला गया।

अकबर ने देखा कि बीरबल आ रहा है। अकबर ने बीरबल से पूछा, ''बीरबल! बेगम साहिबा कहां हैं?''

बीरबल बोला, ''जहाँपनाह! वे आ रही हैं।''

अकबर ने पूछा, ''तुमको कैसे मालूम कि वे आ रही हैं?''

बीरबल ने कहा, ''जहाँपनाह! एक मिनट इंतजार तो कीजिये!''

ठीक एक मिनट के बाद बेगम साहिबा भागी-भागी आ रही हैं। अकबर ने आश्चर्य से पूछा, ''क्या हुआ?''

तब रानी को समझ में आया कि क्या हुआ। बीरबल ने बेगम साहिबा के अंदर शक डाल दिया कि ''महाराज किसी और लड़की के साथ हैं, जो उनसे भी ज्यादा खूबसूरत है। उसके साथ वे टहलना चाहते हैं।'' शक! सिर्फ उसने शक डाला।

यही शक सारे संसार को तबाह कर रहा है। लोगों को शक है कि ''क्या सचमुच में भगवान सबको देखता है?'' शक है कि ''मरने के बाद मेरा क्या होगा?'' इसीलिए तो लोग लगे रहते हैं? जब रिटायरमेन्ट ले लेते हैं, फिर लोगों को चिंता लगती है। फिर कहीं मंदिर जा रहे हैं, कहीं कुछ कर रहे हैं, कहीं कुछ पाठ हो रहा है तो कहीं कुछ पूजा हो रही है। क्योंकि शक है, ''हो सकता है, स्वर्ग न पहुंचें।'' नरक तो अपने लिए यहां बनाया ही है और अब इच्छा हो रही है कि ''मरने के बाद स्वर्ग पहुंचें।'' मेरा आपसे यह कहना है कि जितने किस्मत वाले आप हैं, उतना किस्मत वाला और कोई हो ही नहीं सकता। जितने अमीर आप हैं, उतना अमीर और कोई हो ही नहीं सकता, क्योंकि आपके अंदर इस सारी सृष्टि का रचयिता विराजमान है। ❖

जितने किस्मत वाले आप हैं, उतना किस्मत वाला और कोई हो ही नहीं सकता। जितने अमीर आप हैं, उतना अमीर और कोई हो ही नहीं सकता, क्योंकि आपके अंदर इस सारी सृष्टि का रचयिता विराजमान है।

महाराजी के प्रवचन से उद्धृत

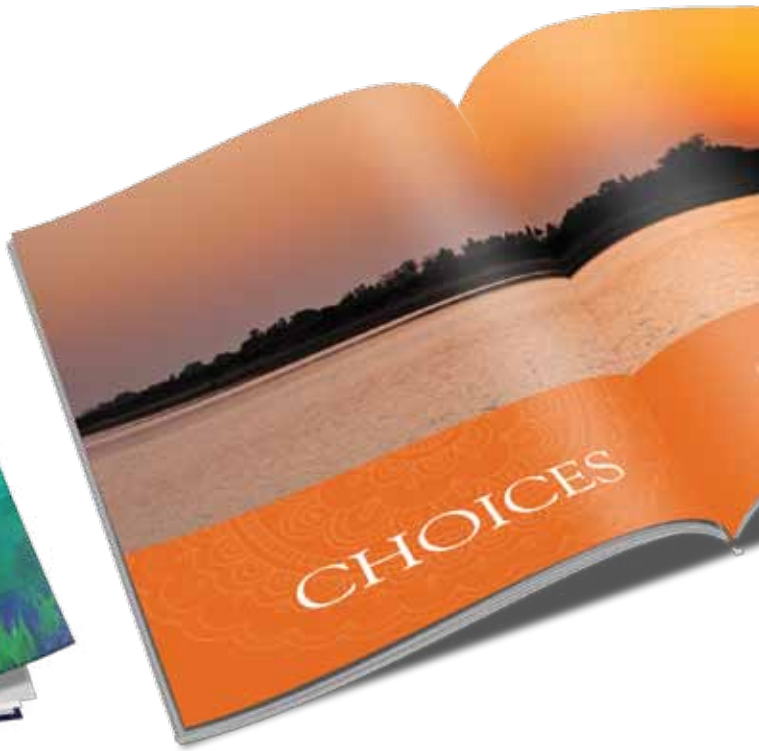

पाठकों के पत्र

महाराजी सारे संसार में जा-जाकर लोगों के बीच यही संदेश सुनाते हैं कि जिस शांति की मनुष्य को जरूरत है, वह उसके अंदर ही मौजूद है। जिसे प्राप्त करने की जरूरत महसूस हो, वे उसकी मदद कर सकते हैं।

शांति पत्रिका वास्तव में शांतिदायक है। जब भी इस पत्रिका को मैंने पढ़ा है, यही मेरे हृदय में महसूस हुआ है कि जो बातें पत्रिका में प्रकाशित हैं, वे सिर्फ शब्दों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें अत्यन्त प्रगाढ़ता भी निहित है। इस पत्रिका में जो महाराजी के संदेश-प्रवचन प्रकाशित होते हैं, वे तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य और जीवन में आंतरिक शांति को पाने की प्रेरणा देते ही हैं, साथ ही उसमें महाराजी के प्रवचनों से ही उद्धृत जो बोध कथा है, वह भी हृदय को स्पर्श करती है, इससे बहुत प्रेरणा मिलती है। इस पत्रिका की रूप-रेखा व सौन्दर्यता पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है, जो निस्संदेह पत्रिका का आकर्षण बढ़ाता है।

अरुण कुमार सिन्हा,
गुड़गांव, हरियाणा

मैं पांच साल से इस पत्रिका का सदस्य हूं और मैं इसके हर अंक के इंतजार में रहता हूं। यह पत्रिका महाराजी के संदेश को नये लोगों तक ले जाने में जबरदस्त सहयोग दे रही है। इस पत्रिका की गुणवत्ता और आकर्षण को देखकर लोग हैरान हो जाते हैं और इस पत्रिका को पढ़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जिन जिन लोगों को मैंने यह पत्रिका पढ़ने के लिए दी, सबने इसकी तारीफ की है। महाराजी का संदेश लोगों के जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। इसके लिए महाराजी को बहुत-बहुत धन्यवाद। जो संपादकीय टीम महाराजी के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने में सहयोग कर रही है, मेरी तरफ से उनको शुभकामनाएं और धन्यवाद।

अमरीक सिंह सैनी,
पानीपत, हरियाणा

जब से मैंने शांति पत्रिका को नियमित रूप से ध्यानपूर्वक पढ़ना शुरू किया तो मेरी अपनी मंजिल 'शांति' की खोज पूर्ण हो गई। अर्थात् मैंने शांति को पा लिया, अपनी मंजिल को पा लिया, अपने हृदय को पा लिया, अपने हृदय के अंदर स्थित स्वर्ग को पा लिया। सचमुच में शांति पत्रिका में निहित महाराजी के आशापूर्ण संदेश से मेरा जीवन सार्थक हो गया। महाराजी के संदेश से मेरे अपने जीवन में अंतर्निहित शांति की खोज पूरी हुई, जो अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं हो सकी। महाराजी के आशीर्वाद से प्राप्त इस

महान उपलब्धि के लिए उनको सहृदय धन्यवाद!

डा. जय शंकर प्रसाद,
रोहतास, बिहार

मेरे परिवार में माँ और पिता जी महाराजी के शांति के संदेश से परिचित हैं। हमारे गांव में शांति पत्रिका नियमित आती है। मेरे घर में चार पत्रिका महाराजी के शांति-संदेश के प्रचार हेतु हर दो महीने बाद मिल जाती है। मैं शांति पत्रिका के सभी पन्नों को ध्यान से पढ़ता हूं और सोचता हूं कि यह शांति मुझे भी मिले। अब पत्रिका के साथ मैंने सेल्फ डिस्कवरी कैसेट को भी देखना प्रारंभ कर दिया है। यह प्रेरणा मुझे शांति पत्रिका से ही मिली। ऐसे मार्गदर्शक-पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम के साथ ही राज विद्या केन्द्र को बहुत-बहुत धन्यवाद!

मुकेश कुमार रजक,
भाटापारा, छत्तीसगढ़

वैसे तो शांति पत्रिका का प्रत्येक वाल्यूम ही आकर्षक एवं महत्वपूर्ण होता है, परंतु 50वां वाल्यूम अत्यन्त ही आकर्षक था। इस अंक से प्रभावित होकर मैं स्वयं 2014 के लिए शांति पत्रिका का सदस्य बन गया। इस अंक के पश्चात प्रत्येक अंक में महाराजी के अलावा सत्संग सुन रहे श्रोताओं की फोटो भी प्रकाशित होने लगी है। महाराजी और जगह-जगह पर श्रद्धालु-श्रोताओं के फोटो पत्रिका को और भी अधिक आकर्षक बना देते हैं। यह शांति पत्रिका महाराजी के शांति-संदेश के प्रचार-प्रसार में बहुत ही सहायक है। प्रत्येक व्यक्ति को यह पत्रिका अवश्य ही मँगानी चाहिए।

दिनेश कुमार लाड़ना,
जयपुर, राज.

शांति पत्रिका के द्वारा महाराजी का शांति-संदेश लोगों को बड़े ही आसानी से उपलब्ध हो जाता है। आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में प्रत्येक मनुष्य को जाने या अनजाने में शांति की जरूरत महसूस होती है। परंतु वह शांति कैसे मिले, इसकी जानकारी नहीं है। महाराजी सारे संसार में जा-जाकर लोगों के बीच यही संदेश सुनाते हैं कि जिस शांति की मनुष्य को जरूरत है, वह उसके अंदर ही मौजूद है। जिसे प्राप्त करने की जरूरत महसूस हो, वे उसकी मदद कर सकते हैं। महाराजी के संदेश के प्रचार में यह पत्रिका बड़ी ही सहयोगी है। इसकी सजावट, बनावट बड़ी ही गुणवत्तापूर्ण है।

सुरेश गुप्ता,
ईसापुर, दिल्ली

महाराजी के संदेश से मेरे अपने जीवन में अंतर्निहित शांति की खोज पूरी हुई, जो अन्यत्र कहीं भी संभव नहीं हो सकी।

मित्र हमारा होय

कबीर सब ते हम बुरे, हम तें भल सब कोय।
जिन ऐसा करि बूझिया, मित्र हमारा होय।।

कबीरदास

कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में यदि श्रेष्ठ बनना है, यदि स्वयं को परमेश्वर के निकट महसूस करना है तो आत्मावलोकन ही एक मात्र साधन है। परमेश्वर के प्रिय वे ही व्यक्ति हो सकते हैं, जो दूसरों में बुराई नहीं देखते हैं, बल्कि अपने भीतर झांकते हैं और परमपिता परमेश्वर के समक्ष स्वयं को समर्पित करके भाव रखते हैं कि ''हे प्रभु! आपके भक्तों में सिर्फ मैं ही सबसे बुरा हूं, मैं ही सबसे अधम हूं। बाकी सभी लोग बहुत अच्छे-भले हैं। सभी तुझे बहुत प्रिय हैं। हे प्रभु! मेरी बुराइयों को भी अपने अनुग्रह से, अपने आशीर्वाद से नष्ट करके अपने मित्रों में, अपने सच्चे भक्तों में मुझे शामिल करके मेरे जीवन को भी सफल बनाइये।'' अर्थात् परमात्मा के समक्ष जब अपनी सभी बुराइयों को, समस्त लोभ, मोह, अहंकार को त्यागकर सच्चे भाव से जाया जाता है, तभी परमात्मा का असली प्रेम, असली स्नेह प्राप्त किया जा सकता है।

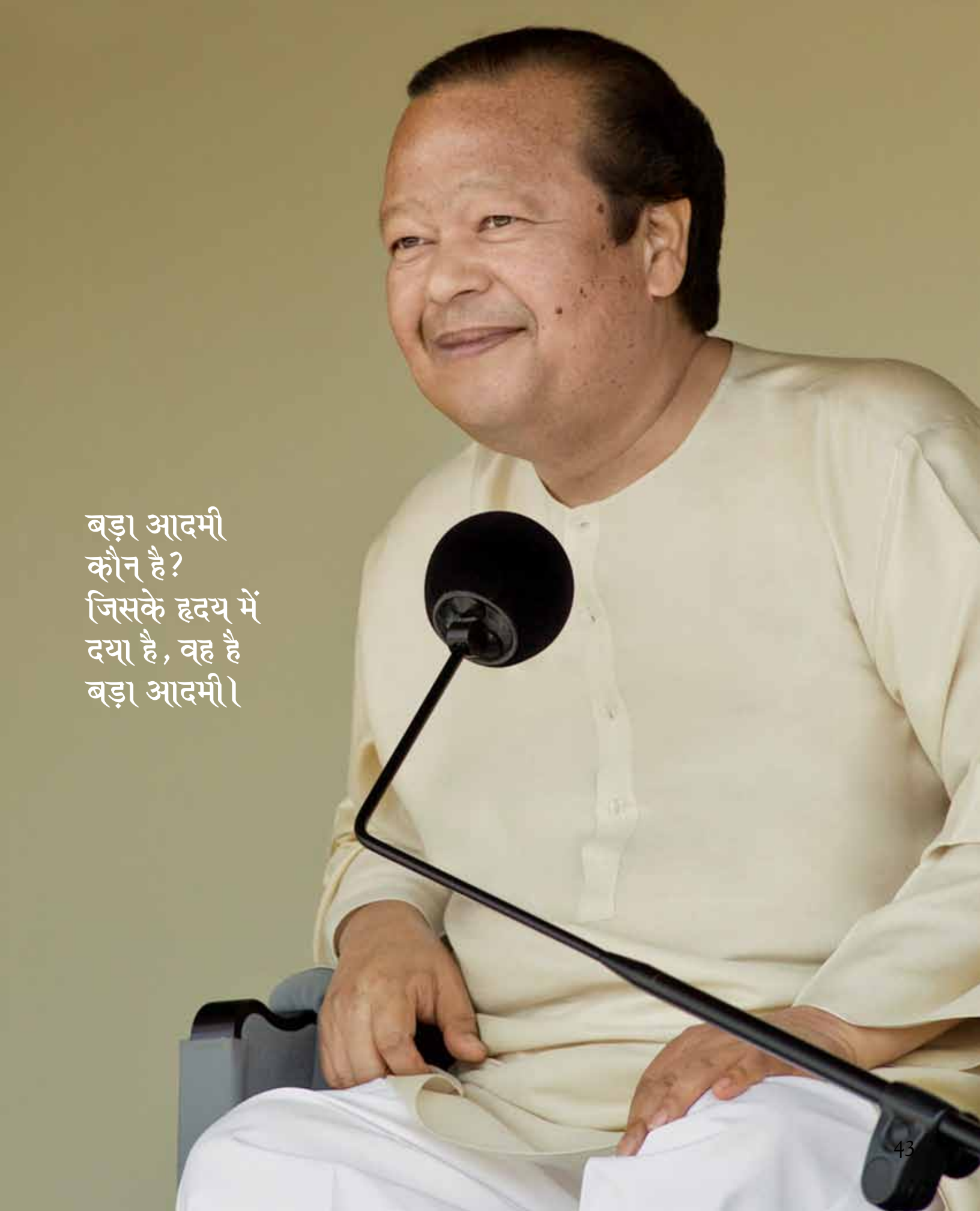

बड़ा आदमी
कौन है?
जिसके हृदय में
दया है, वह है
बड़ा आदमी।

राज विद्या केन्द्र
शहूरपुर, छत्तरपुर, नई दिल्ली–110074
फोन : 26654921–23, फैक्स : 91 11 26654502
ईमेल : rvkender@vsnl.net
वेब साइट : www.rajvidyakender.org
© Raj Vidya Kender